ओ३म्
इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
रविवार,02 जून 2013
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र
सप्ताह रविवार 02 जून, 2013 से 08 जून, 2013
ज्ये. कृ.–09 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 77, अंक 58, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,113 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

ओ.एस. डी.ए.वी. कैंथल में हुआ 21 कुण्डीय यज्ञ

महात्मा हंसराज जी की 149वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में ओ.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैथल में लगातार दो दिन 21 कुण्डीय वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रथम दिन सीनियर सेकेण्डरी विंग में तथा दूसरे दिन प्राईमरी विंग में 21 कुण्डीय वैदिक यज्ञ किया गया जिसमें पहली कक्षा से चौथी कक्षा तक 1550 तथा आठवीं से दसवीं तक 1100 छात्रों के साथ संबंधित अध्यापक–अध्यापिकाओं व अन्य सहयोगियों ने अगाध आस्था व श्रद्धा से मुख्य यजमान विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं क्षेत्रिय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन के नेतृत्व में यज्ञाहुति अर्पित की। यज्ञ के पशचात् समस्त यजमानों को सम्बोधित करते हुए श्रीमती निझावान ने त्याग के सूर्य तथा यज्ञमय जीवन के साक्षात् प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए तथा जीवन में बड़ों के प्रति सत्कार, सम्मान, बराबर वालों को सहयोग तथा अपने से पिछड़ों को ज्ञान, अनुभव व हर प्रकार की सहायता दे देना, उनके जीवन का उन्नत बनाकर समाज में सुख शान्ति समृद्धि व सद्भाव की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती जसबीर कौर ने यज्ञ को सफल बनाने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। यज्ञ ब्रह्मा पंडित राजन शास्त्री, श्रीमती मधुमती अहलावत, डा. सदन राय व श्री प्रवीन कुमार के शांति पाठ व जयघोषों के द्वारा यज्ञ का समापन हुआ। अन्त में यज्ञशेष का विवरण भी किया गया।

डी.ए.वी. हुडा पानीपत में महात्मा हंसराज जयन्ती

महात्मा हंसराज जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 'संध्या मंत्रों' से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। आठवीं कक्षा की छात्रा 'अपर्णा' के द्वारा महात्मा हंसराज जी के जीवन के बारे में बताया गया।

आठवीं कक्षा की छात्राओं (भाग्यश्री, वैशाली आदि) के द्वारा एक समूह गान 'धरती' की शान तू, मनुकी संतान, तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान रे' प्रस्तुत किया गया। एक और समूह गान प्रस्तुत किया गया आठवीं कक्षा की छात्राओं के द्वारा 'वेदों के पथ पर चल जीवन बना'। बच्चों से महात्मा हंसराज जी के बारे में प्रश्न पूछते हुए एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। एक लघु नाटिका के द्वारा महात्मा हंसराज जी ने स्वामी दयानन्द जी मिशन का पूरा करने की प्रेरणा देते हुए आर्यों के कर्तव्यों से बच्चों को अवगत कराया। बच्चों ने भी महात्मा हंसराज जयन्ती पर शपथ ली कि–

हम महापुरूषों के पदचिन्हों पर चलेंगे। उनके अनुयायी बनेंगे।

महात्मा हंसराज जी का अनुकरण करते हुए उनके मानस पुत्र बनेंगे।

प्राचार्या श्रीमती सरोज गर्ग व अध्यापिका अंजना शर्मा के द्वारा महात्मा हंसराज जी के जीवन व कार्य–कलापों पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को उनके द्वारा बताए गए पाँच 'सकारों' (संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, संस्कार और सेवा) को जीवन में ढालने तथा पांच विकार (विवाद, विताग, विरोध विद्वेष और विघटन) छोड़ने के लिए बच्चों को प्रेरित किया।

डी.ए.वी. रोहतक ने मनाया वार्षिकोत्सव

डी.ए.वी. शताब्दी स्कूल, रोहतक द्वारा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के टैगोर आडिटोरियम में वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि रोहतक रेंज के पुलिस महानिरीक्षक श्री अनिल राव तथा सम्माननीय अतिथि श्री योगेश्वर दत्त, थे। इस अवसर पर स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति के सदस्यगण, प्रसिद्ध आर्यसमाजी तथा विभिन्न स्कूलों के प्रिंसिपल उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा कि वे इस विद्यालय की प्रगति से काफी प्रभावित हुए हैं। यह विद्यालय वर्तमान में शिक्षा, संस्कृति तथा हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कत्थक नृत्य, नृत्य नाटिका 'गंगा–एक मंथन' तथा नृत्य 'सत्यमेव जयते' दर्शकों के लिए एक अनूठा अनुभव रहा। पुरस्कार वितरण समारोह शैक्षणिक क्षेत्र के साथ अन्य क्षेत्रों में विशेष उपलब्धि पाने वाले विद्यार्थयों को पुरस्कार वितरित किए गए।

प्रधानाचार्या श्रीमती सुनेजा ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट उपस्थित

जनसमुदाय के सामने प्रस्तुत की। इस अवसर पर सभी अतिथियों और अभिभावकों को यह खुशखबरी दी गई कि ASSOCHEM की तरफ से डी.ए.वी. विद्यालय श्रृंखला को भारत की सर्वश्रेष्ठ विद्यालय श्रृंखला घोषित किया गया। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में यह भी बताया कि डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रोहतक अब पूरे शहर के प्रमुख स्कूलों में अग्रणी है तथा डी.ए.वी. संस्था ने समाज व शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा विश्वसनीय व सम्मानित स्थान बना लिया है जिससे प्रभावित होकर अन्य विद्यालय भी इस विद्यालय के साथ जुड़कर गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 02 जून, 2013 से 08 जून, 2013

क्रव्यात् अग्नि दूर हो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यत् कृष्टे यद् वनुते, यच्च वस्नेन विन्दते।
सर्व मर्त्यस्य तन्नस्ति, कव्याच्चेदनिराहित:।।

अथर्व12.2.36

ऋषि: भृगु:। देवता अग्नि:। छन्द: अनुष्टुप्।

● (**यत्**) जो (**कृषते**) खेती–बाड़ी से प्राप्त करता है, (**यत्**) जो (**वनुते**) [भिक्षा–वृत्ति से या पितृधन आदि के रूप में] मांगकर प्राप्त करता है, (**यत् च**) और जो (**वस्नेन**) मूल्य से (**विन्दते**) प्राप्त करता है, (**मर्त्यस्य**) मनुष्य का (**तत् सर्व**) वह सब (**नास्ति**) नहीं रहता, (**चेत**) यदि (**क्रव्यात**) मांसभक्षी चिताग्नि (**अनिराहित:**) निष्कासित नहीं किया जाता।

● मनुष्य खेती–बाड़ी करता है। भूमि सस्य–श्यामला हो जाती है। फसल पकती है, कटती है, अन्नागारों में भरी जाती है। कृषक को ऐश्वर्यवान् कर देती है। अनेक साधनों में से यह कृषि ऐश्वर्यशाली बनने का एक साधन है। इसके अतिरिक्त मांगने से, भिक्षावृत्ति से भी, ऐश्वर्य प्राप्त होता है। ब्रह्मचारी भिक्षावृत्ति से निर्वाह करता है, आचार्य भिक्षावृत्ति से शिक्षणालय चलाता है, संन्यासी भिक्षावृत्ति से जीवन–यापन करता है। संस्थाएँ भिक्षावृत्ति से चलति हैं, लोकोपयोगी सेवा–कार्य भिक्षावृत्ति चलते हैं। मनुष्य को पितृधन आदि के रूप में भी भिक्षा मिलती है। इस प्रकार मांगना भी ऐश्वर्य–प्राप्ति का एक साधन है। जो मनुष्य धनी होते हैं, जिनके पास उपभोग के लिए पर्याप्त द्रव्य होता है, वे मूल्य से क्रय करके भी ऐश्वर्य उपार्जित करते हैं, साज–समान से सुसज्जित बड़ी–बड़ी कोठियाँ खड़ी कर लेते हैं, रथ–बग्घी, बाग–बगीचे, कल–कारखाने खड़े कर लेते हैं।

चाहे कृषि से प्राप्त ऐश्वर्य हो, चाहे भिक्षावृत्ति से प्राप्त ऐश्वर्य हो, चाहे मूल्य से खरीदा हुआ ऐश्वर्य हो, चाहे अन्य किसी साधना से प्रयत्नपूर्वक जुटाया गया ऐश्वर्य हो, सब एक क्षण में समाप्त हो जाता है, यदि अकाल मृत्यु आकर मनुष्य को कवलित कर लेती है। अत:, राष्ट्र से अकाल मृत्यु दूर होनी चाहिए। ये जो श्मशान में शिशुओं की, कुमारों की, नवयुवकों की, पूर्ण आयु से पूर्व ही मृत हो गये अन्य नर–नारियों की शवभक्षी चिताग्नि के क्रन्दनकारी दृश्य दिखाई देते हैं, वे समाप्त होने चाहिएँ। देश का प्रत्येक मनुष्य चिरजीवी हो, स्वस्थ रहता हुआ शत वर्ष या शत वर्ष से भी अधिक आयु को प्राप्त करे, इसका प्रयास होना चाहिए। यह प्रयास वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रिय तीनों स्तरों पर हो तो पर्याप्त अंशों में हम 'क्रव्यात् अग्नि' अर्थात् मांसभक्षी चिताग्नि को देश से निष्कासित कर सकते हैं। वैयक्तिक रूप से हम स्वास्थ्य के नियमों का पालन करें, उचित आहार–विहार रखें, सामाजिक और राष्ट्रिय रूप में चिकित्सा–साधनों एव चिकित्सा–शिक्षा आदि को सुलभ करायें।

आओ, हम सब मिलकर 'क्रव्यात् अग्नि' को निराहित करें, गलहत्था देकर राष्ट्र–भूमि से निष्कासित करें तथा विविध साधनों से उपार्जित ऐश्वर्यों का चिरकाल तक संयम–पूर्वक वेद–विहित रीति से उपभोग करते रहें। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

मितव्ययता की बात चल रही थी। स्वामी जी ने कहा मितव्ययता का अर्थ कंजूसी नहीं। हम धन का खर्च तो करें लेकिन उतना जितना उचित हो। बचाकर रखेंगे तभी तो दान कर सकेंगे। 'दान' शब्द में सफल मानव जीवन की सम्पूर्ण कहानी छिपी पड़ी है।

कुछ लोग जो धन की निन्दा ही करते रहते हैं वे ठीक नहीं हैं। वेद धन की निन्दा नहीं करता। धन स्वयं भला या बुरा नहीं यह तो केवल एक साधन है। इसका प्रयोग ही इसे अच्छा या बुरा बना देता है।

बादशाह ज़फर का प्रसंग सुनाकर स्वामी जी उनकी बात सुनाई–धन मनुष्य में अभियान उत्पन्न करता है, उसे गिराता है, परन्तु कब जब मनुष्य न रहे।

वेद धन की निन्दा नहीं करता अपितु धन कमाने की प्रेरणा देता है। वेद कहता है धन कमाओ परन्तु ऐसे जिससे आपकी आत्मा ऊपर उठे, नीचे न गिरे। रिश्वत खोरी, मिलावट करना धन कमाना है तो मत कमाओ। और आपका कमाया धन पुष्टि देने वाला हो, शक्ति देने वाला हो। धन ऐसा कमाओ जो तुम्हें यश, कीर्ति और सम्मान दे।

दूसरों का जीवन बनो; उन्हें ऊपर उठाओ; कल्याण की ओर ले चलो; दूसरों से प्यार करो; और अग्रणी बनो इन पांच गुणों को धारण कर धन वान बनो।

अब आगे.....

मैं यह नहीं चाहता कि आप सब लोग उस कंजूस की भाँति बन जाइये जो घी के डिब्बे को अच्छी प्रकार बाँधकर एक दीवार के साथ लटकाये रखता और भोजन करते समय उसकी ओर देख–देखकर सूखी रोटी और बिना घी की सब्जी खा लेता था। यह व्यक्ति एक दिन एक दूसरे कंजूस को मिला। दोनों अपनी–अपनी मितव्ययिता की बातें करने लगे। घी वाले ने कहा, "मैंने दो वर्ष पूर्व एक लोटा घी खरीदा था, अभी तक उसका बहुत बड़ा भाग ज्यो–का–त्यों है।"

दूसरे कंजूस ने पूछा,"तुम इसका प्रयोग कैसे करते हो?"

पहला बोला, "भोजन करते समय उसकी ओर देख लेता हूँ। उसकी गंध सूंघ लेता हूँ।"

दूसरे ने कहा,"बहुत अपव्ययी हो तुम! अरे घी को रोटी के ऊपर भले ही मत लगाओ, हवा लगाने से वह कम तो होता है। उसका रस तो सूखता है। हमारे घर में साठ वर्ष पूर्व का एक पंखा है। मेरे दादा ने इसे खरीदा था। सारा घर इसका प्रयोग करता है। अभी तक वह ज्यों–का–त्यों है। बिल्कुल ऐसा जैसा साठ वर्ष पूर्व था।"

पहले ने कहा, "यह कैसे हो सकता है? तुम सब लोग साठ वर्ष से उसका प्रयोग करते रहे हो तो कुछ–न–कुछ तो वह घिसा होगा।"

दूसरे ने उत्तर दिया,"तुमने सबको अपने–जैसा मूर्ख समझ लिया है? अरे, प्रयोग करने की विधि तो पूछ। हमने पंखे को एक संदूक में बन्द कर रक्खा है। संदूक पर ताला लगा है। हमारे घर में जिस व्यक्ति को गर्मी लगती है वह उठता है, संदूक के गिर्द चक्कर लगा लेता है, समझ लेता है कि हवा आ गई।"

एक तीसरा व्यक्ति भी वहां खड़ा था। वह बोला, "तुम इसे मितव्ययिता कहते हो? अरे, संदूक के गिर्द बार–बार चलोगे तो फर्श कितना घिस जायेगा?"

दूसरे ने पूछा,"फिर क्या करें?"

तीसरे ने कहा,"जैसा हम करते हैं। हमारे पास भी एक पंखा है। रक्खा है संदूक में। संदूक पर ताला है। घर में जिसकी गर्मी लगे वह संदूक के पास जाकर एक स्थान पर खड़ा होकर दायें–बायें हिलता है, उसे हवा आ जाती है।"

एक चौथा कंजूस भी था। वह बोला, "तुम सब अपव्ययी हो। हमने पंखा कभी खरीदा ही नहीं जब गर्मी लगती है, सड़क के परली ओर एक मकान का पंखा देख लेते हैं; इसी से तसल्ली हो जाती है।"

[आर्यसमाज का हॉल हंसी से गूंज उठा। पूज्य स्वामी जी भी हंसते हुए बोले--]

देखो, ऐसी मितव्ययिता की बात मैं नहीं कहता। यह तो धन पर सॉप बनकर बैठ जाना है। न स्वयं खाये, न दूसरों को खाने दें। धन को खर्च करो अवश्य, परन्तु उचित व्यय करो। जितनी चादर हो उससे पॉव तनिक फैलाओ जिससे कुछ बचा भी सको। बचाकर रक्खोगे, तभी दान दोगे।

यह है दान की महिमा ! 'दान' शब्द में सफल मानव–जीवन की सम्पूर्ण कहानी छिपी पड़ी है। कुछ लोग कहते हैं कि धन

की बात हमें अच्छी नहीं लगती। धन बुरी वस्तु है, सहस्त्रों बुराइयों का मूल कारण है। इसकी बात आप क्यों करते हैं? शायद ऐसे ही किसी सज्जन ने कहा था–

ऐसो को जन्म्यो भव माहीं।
प्रभुता पाय जाय मद नाहीं।।

और फिर बिहारी ने तो यह यभी कहा था–

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय।।

कनक कहते हैं धतेरे को और कनक सोने को भी कहते हैं। महाकवि ने कहा–'दोनों ही पागल करते हैं। धतूरा कम पागल करता है, सोना अधिक; क्योंकि धतूरे को तो खाकर आदमी पागल होता है, सोने को प्राप्त करते ही पागली हो जाता है।

ऐसे ही कई देसरे विद्वानों और आचार्यों ने भी धन की निन्दा की है। परन्तु वेद भगवान् तो इसकी निन्दा नहीं करता, क्योंकि धन स्वयं बुरा अथवा भ्झला नहीं। यह केवल एक साधन है, एक तलवार है। उसका प्रयोग ही उसे अच्छा या बुरा बना देता है। तलवार बुरी नहीं, अपितु बहुत बुरी है, यदि आप उससे किसी दुःखी का, निर्धन का, गाय का, किसी निर्दोष साधु और महात्मा का वध करते हैं। परन्तु यही तलवार बहुत अच्छी है यदि आप इसको अपने देश की रक्षा के लिए काम में लाते हैं, देश के शत्रुओं का नाश करते हैं, अन्याय का विनाश कर न्याय की रक्षा करते हैं। बन्दूक बुरी है जब वह किसी दूसरों का सम्मान और दूसरों का अधिकार छीना जाता है। परन्तु यही बन्दूक बहुत अच्छी है जब वह देश के उस सिपाही के हाथ में है जो सीमा पर खड़ा होकर आगे बढ़ते हुए शत्रु को रोकने का प्रयत्न कर रहा है; जब वह उस पुलिसवाले के हाथ में है जो डाकुओं से गांववालों को बचाने का प्रयत्न कर रहा है और जब वह जेल के अधिकारी के हाथ में है जब वह किसी कातिल को दण्ड देता है। यही हाल धन का भी है। धन अपने–आप में अच्छा या बुरा नहीं, उसका अच्छा या बुरा उपयोग ही उसे अच्छा या बुरा बना देता है।

बादशाह 'ज़फर' हुए हैं न।इसी दिल्ली में वह मुग़ल साम्राज्य का टिमटिमाता हुआ चिराग बनकर बैठे थे। 104 वर्ष पूर्व यह दिल्ली उनकी थी। मुग़लों का तख्त उनका था। राजा होने पर भी विचित्र प्रकार के फकीर व्यक्ति थे। देशभक्त भी बड़े थे। देश की परतन्त्रता उन्हों अखरती थी। इसी परतन्त्रता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए वे बन्दी हुए। तख्त और ताज छिन गया। कैद होकर वर्मा पहुँच गये। वहीं देशनिकाले की अवस्था में उनका देहान्त हुआ। देशभक्त होने के साथ ही वे कवि भी थे। अपनी सेना को हारते देखकर उन्होंने कहा था–

दमदमे में दम नहीं है खैर मांगूं जान की।
बस ज़फर अब हो चुकी तलवार हिन्दुस्तान की।।

परन्तु जब उन्होंने स्वतन्त्रता के परवानों को देशरूपी दीपक पर साहस और वीरता के साथ हँस–हँसकर बलिदान होते देखा तो एक नई, आशाभरी आवाज में कहा–

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
कसरे–लन्दन तक चलेगी तेग़ हिन्दुस्तान की।।

इन्हीं 'ज़फर' महोदय ने धन के सम्बन्ध में एक बात कही। धन मनुष्य में अभिमान उत्पन्न करता है, उसे गिराता भी है, परन्तु कब गिराता है? जब मनुष्य न रहे। बहुत सुन्दर शब्दों में उन्होंने कहा–

'ज़फर' आदमी उसको न जानियेगा,
चाहे कितना हो साहबे–फ़हमो–जका;
जिसे ऐश में यादे–खुदा न रही,
जिसे तैश में खौफे–खुदा न रहा।।

यह है मनुष्य की पहचान! धन बुरा नहीं; धन को पाकर ईश्वर को भुला देना बुरा है। उसका अनुचित प्रयोग बुरा है। वेद ने धन कमाने की निन्दा नहीं की अपितु धन कमाने की प्रेरणा की है। प्रतिदिन ईश्वर–स्तुति के मंत्र पढ़ते हुए हम प्रार्थना करते हैं–

वयं स्याम पतयो रयीणाम्

'हे प्रभु ! हम धनों के, बहुत सारे धनों के स्वामी बन जायें।' ऋग्वेद (1 । 1 । 3) में स्पष्ट रुप से कहा–

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्।।

'ऐ मानव ! देख, तुझे क्या करना है–मैं बताता हूँ। प्रभु के साथ धन को कमा–प्राप्त कर। प्रतिदिन प्राप्त कर। हाथ पर हाथ धरकर न बैठ जा । परन्तु कैसा धन प्राप्त कर? ऐसा धन जो प्रतिदिन तेरी पुष्टि और शक्ति को बढ़ाये, तुझे यश और कीर्ति देनेवाला हो और जो वीरों को तेरे पास लानेवाला हो।'

मन्त्र में चार बातें कही हैं। पहली यह कि धन कमा अवश्य, परन्तु ईश्वर के साथ। इस प्रकार उपार्जन कर कि तेरा आत्मा ऊपर उठे, नीचे न गिरे। यदि आत्मा का पतन होता है; यदि रिश्वतखोरी, ब्लैक मार्केक और मिलावट करके ही धन कमाना है तो मत कमा ऐसा धन। यह धन तुझे नीचे गिरा देगा। किसी निर्धन का खून चूसकर, किसी भोले–भाले व्यक्ति को अस्ली घी के स्थान पर डालडा खिलाकर, किसी अभागे पिता को उसके पुत्र की बीमारी में नकली दवा देकर और निर्दोष बच्चे की हत्या करके धन कमाना है तो न कमां यह धन तुझे नष्ट कर देगा। भाई को भाई से लड़ाकर, देश में साम्प्रदायिकता की आग लगाकर, परिवारों में फूट पैदा करके यदि धन मिलता है तो ऐसे धन को ठुकरा दे। यह धन आज नही तो कल तुझे सर्वनाश की ओर ले जाएगा। ईश्वर को भूलकर, आत्मा को गिराकर, लाखों–करोड़ों रुपये भी मिलते हों तो उन्हें लेने से इन्कार कर दो। धन कमाओ अवश्य, परन्तु आत्मा के साथ कमाओ, आत्मा की हत्या मत करो। यह एक बात है।

दूसरी यह कि ऐसा धन कमा जो तुझे पुष्टि देनेवाला, शक्ति देने वाला हो ऐसा धन मत कमा जो हर समय तेरे लिए संकट ही बना रहे और तुझे भीरु और डरपोक बना दे। कई लोग अपने धन को अपनी कमर के साथ ही बांधे फिरते है। उन्हें न दिन को चैन मिलता है, न रात को आराम। ऐसे व्यक्ति को धन मिल गया। घर में पड़ा था तो उसे विचार आया, आजकल समय बहुत खराब है, चोरियाँ हो जाती हैं, डाके पड़ जाते हैं, घर में रुपया रखना ठीक नहीं; अपना रुपया लेकर वह बैंक में पहुंचा कि वहां जमा करा दें और घर में आकर चैन से बैठे। परन्तु बैंक पहुंचा तो विचार आया 'क्यों जी! बैंकों का क्या भरोसा? ये भी टूट जाते हैं, दिवाला भी निकाल देते हैं। यह बैंक भी टूट गया तो फिर क्या करुंगा? ऐसा सोचा और रुपये को लेकर घर वापस आ गया। रातभर सोया नहीं। दूसरे दिन उसने सोचा, रुपये को डाकघर में जमा करता हूँ। बैंक टूट जाता है डाकखाना तो नहीं टूटता ! रुपया लेकर डाकखाना पहुंचा। वहां उसके सौभाग्य से एक व्यक्ति खड़ा इधर–उधर देख रहा था। उस व्यक्ति ने पूछा, "क्यों बाबू जी ! उदास –से क्यों हों ? बाबू जी ने कहा, " कोई विशेष बात तो नहीं, परन्तु मैंने रुपया जमा कराया था इस डाकघर में। उस समय जो पोस्टमास्टर था वह बदल गया है। नया पोस्टमास्टर मुझे जानता नहीं। वह कोई परिचित व्यक्ति चाहता है। मैं सोचता हूँ कि परिचित व्यक्ति कहां से लाऊं?

उस व्यक्ति ने सोचा, 'यहां भी आफ़त है। आज मैं यहां रुपया जमा करा दूं, कल यह पोस्टमास्टर बदल जाये तो मैं यह प्रमाण कहां से देता फिरुंगा कि मैं ही मैं हूँ। यह तो रुपये को जोखम में डालने–वाली बात है।' और लो जी, वह फिर वापस घर में ! फिर वही जागती हुई रात। अन्ततः तंग आकर उसने रुपये को एक कपड़े में बांधा। कपड़े को कमर में बांध लिया। पहले केवल रात को भय होता था कि कोई चोर या डाकू न आ जाये, अब उठते–बैठते, खाते–पीते, सोते–जागते, हर समय भय रहने लगा। अब बताओ, ऐसे धन का लाभ क्या है ? वेद कहता है ऐसा धन मत कमा जो तुझे निर्बल बना दे, अपितु ऐसा धन कमा जो तुझे शक्ति दे, साहस दे, तेरी शक्ति और साहस को बढ़ाता रहे।

और फिर तीसरी बात यह है कि ऐसा धन कमा जो तुझे यश, कीर्ति और सम्मान दे। ऐसा धम मत कमा जो तेरे अपमान का कारण हो। पंजाबी की एक कहावत का अर्थ है कि 'धन तो वेश्याओं के पास भी होता है।' धन का होना मनुष्य को सम्मान नहीं देता। अच्छा धन वह है जो मनुष्य को दूसरों की दृष्टि में सम्माननीय और आदर के योग्य बनाए। यदि आप धन जमा करके बैठे हैं और आपके आसपास के लोग भूखे मर रहे हैं और परन्तु आप उन्हें अन्न नहीं देते, लोग नंगे है और आप उन्हें तन ढकने के लिए वस्त्र नहीं देते, लोग प्यास से मर रहे हैं आप उन्हें पानी नहीं पिलाते, लोग बीमार हैं और आप उनकी औषध का प्रबन्ध नहीं करते तो धिक्कार है इस ध्न पर ! याद रक्खो, ऐसा धन संकट बन जाता है। वह दूसरों के हृदय में घृणा और द्वेष उत्पन्न नहीं करता। इसलिए वेद ने कहा, ऐसा धन कमा जो यश देनेवाला हो।

और फिर अन्तिम बात यह कि ऐसा धन कमा जो वीर लोगों को तुम्हारे पास लानेवाला हो। ऐसा धन कमा जिससे वीरो का, देश और समाज की रक्षा करने वालों का पालन हो।

यह है धन के सम्बन्ध में वेद की आज्ञा। धन इस प्रकार कमाओ कि आत्मा का पतन न हो, ऐसा धन कमाओ जो प्रतिदिन शक्ति बढ़ाये, भय का कारण न बना रहे, जो यश देनेवाला हो, जिससे वीरों और विद्वानों को पालन हो। ऐसा ही धन वास्तविक धन है। ऐसे धन की निन्दा न वगद करता है, न कोई ऋषि और महर्षि।

अथर्ववेद में तो धन के सम्बन्ध में कितने ही मन्त्र आते हैं। तीसरे काण्ड का एक मन्त्र है–

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः। (3 । 15 । 6) 'हे प्रभो ! जिस धन से मैं और धन कमाने की इच्छा करता हूँ वह लगातार बढ़ता जाये, कभी कम न हो।'

यह है वेद का उपदेश ! वेद धन को समाप्त करने, उसे मिटा देने, उसे कम करने और उससे घृणा करने का उपदेश नहीं देता अपितु उसे निरन्तर बढ़ाने का उपदेश देता है। इसी मंत्र के दूसरे भाग में कहा–

तस्मिन्न म इन्द्रो रुचिमा दधतु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः।।

अर्थात् 'हे प्रभों ! ऐसी कृपा करो कि इन्द्र, प्रजापति, सविता, सोम ओर अग्नि मेरी इस इच्छा को पूर्ण करने में

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

श्री विश्वनाथ रचित क्षणिकाएं : जो जीवन के मर्म को उद्घाटित करती हैं

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

सचमुच यह आश्चर्य की बात है कि एक विशाल प्रकाशन संस्थान का दायित्व संभालने वाले तथा डी.ए.वी. जैसे व्यापक शिक्षण संस्थान को अहर्निश समय देने वाले विश्वनाथ जी विश्वनाथ जी समय निकाल कर काव्य रचना में भी तत्कालीन हो जाते हैं। वह काव्य भी कैसा जो मानव जीवन के मार्मिक पहलुओं का उद्घाटन करता है तथा विचारशील पाठक को कुछ नया सोचने के लिए प्रेरित करता है।

यों तो काल के लक्षण और प्रयोजन को लेकर साहित्य शास्त्रियों ने पर्याप्त ऊहायोह किया है तथा निष्कर्ष रूप में रस को ही काव्य की प्रमुख तत्त्व बताया है। साथ ही यह भी स्वीकार किया गया है कि उक्ति की विभिन्नता, अभिव्यक्ति का कौशल यों कहें तो तर्जे अदा भी काव्य की परिसीमा में आते हैं। मात्र छंदोबद्ध होने से ही कोई रचना काव्य की संज्ञा प्राप्त नहीं करती, उसे हम पद्य (Verse) ही कहते हैं। भले ही कोई रचना छंदोबद्ध न हो, उसमें लय न हो, तुक या अंत्यानुप्रास का भी अभाव हो, यदि वह पाठक के मर्म को छूती है, उसे क्षण भर के लिए आश्चर्य, उल्लास का अनुभव कराती है तो उसे काव्य कहा जा सकता है। विश्वनाथजी की क्षणिकाएं भी इसी कोटि की काव्य कृतियां हैं जो अत्यन्त अल्प शब्दों में मार्मिक तथ्यों का उद्घाटन करती हैं। बिहारी के दोहों की भांति, नावक के तीरों की भांति गंभीर घाव करती हैं।

'आज का नचिकेता' कठोपनिषद् में आये वाजश्रवा के उस पुत्र से ठीक उलट है जो पिता के द्वारा दिये गये दण्ड को सहर्ष स्वीकार कर आचार्य यम के निकट चला जाता है किन्तु काल की विडम्बना देखें, आज का नीचकेता पिता का समाधान करना तो दूर उसे ही यम को सौंप देने के लिए लालायित है। मैं ऋणी हूं' में कवि ने प्राकृतिक जगत् के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है। कारण कि पृथ्वी, आकाश, पर्वत, नदी, बादल और सूर्य अनादि काल से इन्सान के वे संगी-साथी रहे हैं। जिनसे उसने बहुत कुछ ग्रहण किया है और अपनी जीवन यात्रा को सुकर बनाया है। प्रकृति से मनुष्य कभी उऋण नहीं हो सकता। 'फैसले का दिन' शीर्षक रचना इस तथ्य को उजागर करती है कि मनुष्य के लिए यह उचित है कि मनुष्य को अपने फैसले खुद करने चाहिए। वस्तुतः स्वयंकृत अच्छे-बुरे कर्मों की विवेचना जितनी ईमानदारी और पारदर्शिता से मनुष्य स्वयं कर सकता है इतना कोई विचार पति (न्यायाधीश) भी क्या करेगा? जीवन के इस सत्य को स्वयं ही शिकारी स्वयं ही शिकार शीर्षक में देखा जा सकता है। मानव जीवन अपने आप में एक पहेली है, असमाधेय है, अव्याख्येय है। हम जीवन में विभिन्न वस्तुओं, अनुभवों, चिन्तन कणों तथा स्थूल-सूक्ष्म पदार्थों का संचय करते हैं किन्तु जीवन की अस्थिरता, चंचलता, तथा क्षण भंगुरता को भुला देते हैं। यह क्षण भंगुरता ही

स्वयं को जानना तथा स्व-पर के भेद को पहचानता मानव जीवन की प्रमुख कसौटी है। दार्शनिकों और चिन्तकों में इस शाश्वत प्रश्न का उत्तर तलाशने का यत्न आदि काल से चल रहा है। उसी प्रकार इस सृष्टि का मूल कारण क्या है, इसे जानने का प्रयत्न भी सदा से किया जा रहा है। यदि इस प्रश्न का कोई तुष्टिदायक उत्तर हमें मिल जाये तो दार्शनिक जगत की एक बड़ी पहेली का उत्तर भी मिल जाएगा। कवि ने इस समस्या को पहेली को बूझो तो जानें। शीर्षक क्षणिका में प्रस्तुत किया है।

है जो हमारे जीवन की सारी पूंजी को हमारे द्वारा किये गये संचय और संग्रह को वायु द्वारा उड़ाये गये जीर्ण पत्ते की तरह इधर-उधर बिखेर देता है। मृत्युदेवता शीर्षक अपनी कविता में कवि मृतयु के देवता को सम्मान देने की बात कहता है। अन्य मत-पंथों में मृत्यु को लेकर नाना प्रकार के विचार प्रकट किये गये हैं किन्तु भारतीय दर्शन व चिन्तन में मृत्यु पर विजय पाने, मानव की जीने की शाश्वत इच्छा को सराहा गया है। वेद में पंरमृत्यो अनुपरेहियन्थां' कह कर मौत को दूर रहने के लिए कहा गया है तो उपनिषद् में कर्ममय जीवन व्यतीत करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना की गई है। कुर्वन्नेवेह कर्माणि पंजिविषेच्छतं सभाः (ईशोपनिषद्) तथापि पार्थिव शरीर की नश्वरता को भी सदा याद रखने के लिए कहा गया है। न्याय दर्शन के सूत्र में कहा गया है कि मृत शरीर को जला देने से पाप नहीं लगता, यह इस बात का प्रमाण है कि इस जड़ शरीर से जीवात्मा पृथक हो गया है अतः शरीरदाहे पातकाभावात्।

मृत शरीर को भस्मीभूत करते समय बोले जाने वाले मंत्रों में यमाय स्वाहा, अन्तरण स्वाहा तथा मृत्येव स्वाहा आदि मंत्रों का उच्चारण कर हम जीवन के अन्तकारी यमनाम वाले विधाता के आगे नतमस्तक होते हैं। विचारवान व्यक्ति के लिए जीवन और मृत्यु ही दोनों सत्य हैं। यही इस कविता का सार तत्व है।

निरासक्त, स्थितप्रज्ञ तथा वीतराग दशा को प्राप्त व्यक्ति एक साथ योगी और भोगी, गृहस्थ और संन्यासी की भूमिका में रह सकता है, इसे लेकर चाहे हमारे मन में संशय हो किन्तु भारत में ही राजर्षि जनक तथा योगेश्वर कृष्ण जैसे महापुरूष हुए हैं जिन्होंने जल में रहने वाले कमल पत्र की भांति निर्लेप रहकर जीवन को जिया तथा, दुःखों-द्वन्द्वों तथा संघर्षों को समान भाव से झेला निसंगति, विरोधाभास तथा द्वंद्वों में स्वयं को समरस रखना ही समत्व पूर्ण जीवन को जीने वाले योगी की कसौटी है।

स्वयं को जानना तथा स्व-पर के भेद को पहचानता मानव जीवन की प्रमुख कसौटी है। दार्शनिकों और चिन्तकों में इस शाश्वत प्रश्न का उत्तर तलाशने का यत्न आदि काल से चल रहा है। उसी प्रकार इस सृष्टि का मूल कारण क्या है, इसे जानने का प्रयत्न भी सदा से किया जा रहा है। यदि इस प्रश्न का कोई तुष्टिदायक उत्तर हमें मिल जाये तो दार्शनिक जगत की एक बड़ी पहेली का उत्तर भी मिल जाएगा। कवि ने इस समस्या को पहेली को बूझो तो जानें। शीर्षक क्षणिका में प्रस्तुत किया है।

यों देखा जाए तो विश्वनाथ जी की इन क्षणिकाओं में उपनिषदों में व्यक्त की गई ऋषियों की वाणी को ही शब्द प्रदान किये गये हैं। तभी तो परोक्ष भी सर्वत्र भी शीर्षक कविता में ईशोपनिषद् की तदेजति तन्नेजति तद् दूरे तद्व न्तिके'-वह परमात्मा चलता है और नहीं भी चलता, वह दूर भी है और निकट भी। उक्ति को उद्घाटित किया गया है। कवि के अनुसार जो परोक्ष है वह प्रत्यक्ष भी है, जो स्वप्न है, वह सत्य भी है, जो अन्तर्तम में है उसे पार्थिव चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता जीव और ईश्वर का यह लुका-छिपी का खेल शाश्वत

मृत शरीर को भस्मीभूत करते समय बोले जाने वाले मंत्रों में यमाय स्वाहा, अन्तरण स्वाहा तथा मृत्येव स्वाहा आदि मंत्रों का उच्चारण कर हम जीवन के अन्तकारी यमनाम वाले विधाता के आगे नतमस्तक होते हैं। विचारवान व्यक्ति के लिए जीवन और मृत्यु ही दोनों सत्य हैं। यही इस कविता का सार तत्व है।

है, अनन्तकाल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। उसकी इति कहीं नहीं है।

जीवन में आने वाली बाधाओं, विपत्तियों तथा व्याघातों को अन्ततः सहना ही होगा। मात्र चिन्ता करने से इनका समाधान मिलने वाला नहीं है। यह संदेश पाठक को उस अनाम (शीर्षक विहीन) रचना से मिलता है जो जीवन के शाश्वत प्रवाह की बात कहकर मनुष्य को याद दिलाता है कि केवल चिन्ता करने से दुखों की वैतरणी को पार नहीं किया जा सकता।

विश्वनाथजी की इन लघु रचनाओं को क्षणिकाएं तो हम इसलिए कहते हैं क्योंकि इन्हें पढ़ने में तो कुछ क्षण ही लगते हैं किन्तु इनमें विवेचित सत्य हमारे चिन्तन के नये-नये गवाक्षों को खेलता है। जब कवि मन को बहुरूपिया कहता है तो वेदों के शिवसंकल्पात्मक मंत्रों की और हमारा ध्यान जाता है जहां मन को ज्योतियों की ज्योति, त्रिकाल के अनुभवों को अपने भीतर समायोजित करनेवाला, इन्द्रिय रूपी आंखों से परिचालित रथ को चतुर सारथी की भांति चलाने वाला कहा गया है।

सामान्यतया जन्म दिन को हम आमोद-प्रमोद का दिन मानते हैं किन्तु विचारशील मानव के लिए यह आत्मावलोकन की कड़ी है। तभी तो बुद्धिमान व्यक्ति के लिए वर्षगांठ का दिन विषाद के क्षण लेकर आता है क्योंकि उसमें वह स्वयं की असफलता तथा नियति के शाश्वत चक्र की विजय को देखता है। निश्चय ही विश्वनाथ जी की इन अनुभूतियों को क्षण में उपजी भले ही कहा जाए किन्तु पाठक के समक्ष ये क्षणिकाएं महाभारत के यक्ष का भांति कुछ ऐसे प्रश्न उपस्थित करती हैं जिनका उत्तर देना न तो सहज है और न सरल।

315, शंकर कॉलोनी श्रीगंगानगर

6,9,11

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग से उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त श्री नाहरसिंह वर्मा से भेंट वैदिक सार्वदैशिक के कार्यालय में कुछ वर्ष पूर्व हुई थी जब मैं तत्कालीन सम्पादक श्री सुरेन्द्र सिंह कादियान के पास बैठा हुआ था। कादियान जी ने मेरा उनसे परिचय कराया। नाम सुनते ही श्री वर्माजी ने कहा कि प्रकाशन के पूर्व ही वह मेरे लेख पढ़ लेते हैं। अब कल ही फोन पर उन्होंने पूछा कि सद्य प्रकाशित मेरा कौन सा लेख है। मैंने बताया **"ईश्वरसिद्धि संबंधी मन्तव्य और मैं"** तो तत्काल बोले आपका लेखों का शीर्षक का चयन अद्भुत होता है। आधा मैदान तो शीर्षक से ही मार लेते हो, और शेष सरल, सहज, बोधगम्य हिन्दी से। अब इस लेख का शीर्षक अंकों में देखकर श्री वर्माजी के अतिरिक्त अन्य पाठकों को अटपटा भी लगेगा और कौतुहलजनक भी।

स्पष्ट कर देता हूँ। यह शीर्षक मिला महाराष्ट्र के भण्डारा जिले की तीन बच्चियों से, जिनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और फिर मारकर कुए में फैंक दिया गया। उनकी यही आयु थी। पीड़ा हुई, अतीव पीड़ा हुई, यह सोचकर कि अदम्य कामवासना के वशीभूत होकर बलात्कार किया गया और संभावित परिणाम की आशंका से सबूत क्या, पात्रों को ही मौत के घाट उतार देने में न भय लगा, न शंका हुई और न लज्जा लगी। पाप कर्म से रोकने की इन ईश्वरप्रदत्त चेतावनियों को जैसे इन लोगों ने सुना ही नहीं। कामासक्त होकर पशु भी ऐसा व्यवहार करते हुए न तो देखे गये, न पढ़ने में आए और न ही सुने गये। केवल एक यही उदाहरण नहीं है। यदि मैं संकलित सभी उदाहरण ों का उल्लेख करूँ तो अनेक पृष्ठ भर जाएंगे और वीभत्सता की सड़ांध लेख में से निकलने लगेगी। समाचारपत्रों में और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सभी चैनलों में इस तरह के समाचारों में दिन–रात वृद्धि ही हो रही है।

दामिनी बलात्कार काण्ड, निर्भया बलात्कार पूरे देश को हिला चुका है। विश्व मीडिया में इसकी गूँज हो चुकी है। बड़े तगड़े आन्दोलन के फलस्वरूप केन्द्र सरकार को पहले अध्यादेश लाना पड़ा और अब संसद इस बिल को परित कर चुकी है। पहले की अपेक्षा अब रेप (बलात्कार) की परिभाषा का दायरा बढ़ा दिया गया है और सजा भी। बलात्कारी को फाँसी दिये जाने का प्रावधान रखने की माँग सभी तरफ से जोर–शोर से उठी थी पर इस प्रकरण पर विचार करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त माननीय मुख्य न्यायाधीश वर्माजी की समिति ने "आजीवन कारावास" की सजा–बिना पैरोल के दिये जाने की सिफारिश की थी। मुझे भी लगा कि माननीय वर्माजी, पूरे देश में चल रहे आन्दोलनों, प्रदर्शनों और जनता की माँग से इतने बेखबर हैं कि सजा–ए–मौत की सिफारिश भी नहीं की। कुछ समय गंभीरता से सोचने पर समझ में आया कि ट्रायल कोर्ट (सबसे निचली अदालत) से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक की लम्बी कानूनी प्रक्रिया, जिसमें वर्षों लग जाते है, के पश्चात् ही जघन्यतम् हत्या के अपराधी को जिसमें प्रत्येक न्यायालय यह सुनिश्चित करने पर ही फाँसी की सजा देता है कि अपराध rarest of rare (जघन्य अपराधों में भी जघन्यतम्) श्रेणी का है। अपराधी को एक अवसर मिलता है। कि वह राष्ट्रपति के पास प्राण भिक्षा की याचना करे। प्रतयेक अपराधी प्राण भिक्षा की याचना करता है। प्राण भिक्षा की याचना पर राष्ट्रपति महोदय को 'स्वविवेक' से निर्णय करने का अधिकार है। लेकिन संवैधानिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत राष्ट्रपति दया की याचना केन्द्रीय गृहमंत्रालय को भेजता है और केन्द्रीय गृहमंत्रालय राज्य शासन को भेजता है जहाँ अपराध घटित हुआ हो। राज्य शासन विचार करता है और अपनी अनुशंसा केन्द्र को भेजता है। केन्द्रीय गृहमंत्रालय राज्य शासन की अनुशंसा पर विचार कर अपनी अनुशंसा राष्ट्रपति को भेजता है। इस पूरी प्रशासनिक प्रक्रिया में अनेक वर्ष लगते हैं, फिर राष्ट्रपति कब निर्णय लेते हैं, इसमें भी अनेक वर्ष लग सकते है, फिर 'स्व–विवेक' से क्या निर्णय लेते हैं– यह समस्त आलोचनाओं से ऊपर की चीज है। आश्चर्य हुआ कि एक राष्ट्रपति ने उनके समक्ष प्रस्तुत किये गये बारह प्राणदण्ड अभियुक्तों में से किसी को भी प्राणदण्ड की सजा नहीं दी। न्यायाधीश वर्माजी की अनुशंसा का रहस्य समझ में आ गया। यह भी समझ में आ गया कि फाँसी से ज्यादा भयानक, कष्टकारक तिल–तिल की मौत है जो क्षणिक कामवासना की तृप्ति के उन्माद के कारण अपराधी जीवन भर भोगता रहेगा।

मेरे लिये मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। मैं समाचारपत्रों से कटिंग करता रहा, न्यूज चैनलों की खबरों को संकलित करता रहा। दामिनी बलात्कार काण्ड के बाद बलात्कार की घटनाओं की जैसे बाढ़ सी आ गई है। IBN7 के दिनांक 7 मार्च, 13 के समाचार में बताया गया कि दिल्ली में प्रतिदिन 'रेप– की चार घटनाऐं होती हैं। चीन ने तो दिल्ली को रेप की राजधानी ही बता दिया। घटनाओं में वृद्धि का कारण मीडिया का भय हो सकता है। यदि पुलिस ने कार्यवाही नहीं की और खबर मीडिया को मिल गई तो संबंधित अधिकारियों की खैर नहीं।

मैं जानना चाहता हूँ। सख्त कानून पास होने से, मीडिया में बलात्कारियों की दुर्गति से, न्यायालयों से लम्बी व कानून की कड़ी प्रक्रियाओं में से गुजरने की आशंका और इससे पहिले पुलिस के सत्कार के भय से जनमानस में इस दुष्कृति के प्रति कोई विराग का वातावरण बन पाया है या भविष्य में बन सकेगा? मुझे लगता है कि 'नहीं'। क्यों? इसलिये कि मनुष्य जिन संवेगों से बना है उनका क्रम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर बहुत प्राचीन काल से ही मनीषियों ने निर्धारित कर दिया है। इनमें प्रथम स्थान 'काम' को दिया है।

'काम' का साधारण अर्थ, कामना, इच्छा है, परन्तु जिस कामना को नियंत्रित करने का उपदेश दिया जाता है, वह सामान्य कामना या इच्छा नहीं है। काम के आगे वासना जोड़ने से अर्थ कुछ स्पष्ट होता है। कामवासना का शब्दकोषीय अर्थ वासना का निवास या घर होता है। यदि कामवासना को रूढ़ रूप देकर 'जनेन्द्रिय जन्य उत्तेजना' का अर्थ दिया जाए तभी ठोस अर्थ मिलता है। इसी अर्थ में हम इस शब्द का उपयोग करेंगे।

गीता के अनेक श्लोकों में इसकी विकरालता का वर्णन है। श्रीकृष्ण महाराज ने काम को ज्ञान का ढकनेवाला तथा व्यक्ति का महावैरी कहा है। जैसे धुएं से अग्नि, मल से दर्पण तथा जेर से गर्भ ढंका रहता है वैसे ही इस काम के द्वारा ज्ञान ढंका हुआ है। यह काम "दुष्पूर" है, 'अनल' है। दुष्पूर – जिसे कभी तृप्त नहीं किया जा सके, अनल अर्थात् आग – काम सब कुछ भस्मीभूत कर देता है– अक्ल (बुद्धि) को सबसे पहले।

पौराणिक कथानकों में स्वर्ग के राजा इन्द्र, पृथ्वी पर ऋषियों की तपस्या के प्रभाव से अपने सिंहासन को डोलता हुआ अनुभव कर उनकी तपस्या भंग कराने के लिये रम्भा, मेनका जैसी अप्सराओं का उपयोग करते थे। ये अप्सराएं सफल भी होती थीं। विरोधी राजा की हत्या कराने के लिये विष कन्याओं का उपयोग किया जाता था। महायुद्धों में गुप्त जानकारी प्राप्त करने के लिये रमणियों का उपयोग किया जाता रहा। 'माताहारी' का नाम सर्वाधिक विख्यात् है।

गीता और इन्द का उदाहरण "कामवासना" की दुर्दमनीयता को प्रदर्शित करता है। ये तथ्य श्रेष्ठ बौद्धिक वर्ग के व्यक्तियों के समझ प्रस्तुत किये गये थे। सामान्य, अति सामान्य व्यक्तियों के समझ नहीं बताये गये थे जिनका विवेक इतना जाग्रत नहीं होता कि नीर–क्षीर का विभेद कर 'संयम' की बात सोचें। उनके लिये काम का उद्वेग, सामान्य भूख–प्यास से अधिक नहीं और जिसकी संतुष्टि भी भूख–प्यास की संतुष्टि जैसी ही शीघ्र और 'कैसे' भी होनी चाहिए। पचास वर्ष से भी पूर्व कानपुर की एक घटना का स्मरण हो आया। एक व्यक्ति इतना अधिक कामातुर हो गया कि दिन–दहाड़े, बीच बाजार में उसने एक अज्ञात लड़की को पकड़ लिया और यौन क्रिया में भिड़ गया। लोगों ने उन पर चादर डाल दी।

विचार प्रवाह महर्षि दयानंद की ओर मुड़ गया। संन्यासी शिष्य स्वामी दयानंद मथुरा के छत्ता बाजार से गुजरते हुए यमुना के किनारे जाते और जल भर के लाते। आते–जाते समय दृष्टि सदैव जमीन पर रहती। यह भी उनकी ख्याति का कारण बनी। संभवतया, नहीं, निश्चित रूप से महर्षि ने किसी भी नारी की आँख में आँख डालकर जीवनपर्यन्त नही देखा। महर्षि के बारे में कुल भूमि मासिक सितम्बर 2007 में लिखा था कि महर्षि घन्टों सिद्धासन पर बैठते थे। यह आसन वीर्य प्रवाह वाली नाड़ी को नियंत्रित करता था और 'मालकंगनी' औषधि का भी सेवन इसी हेतु करते थे। महर्षि एक समय भोजन करते थे, शुद्ध शाकाहारी स्वादिष्ट और रात्रि में दुग्धपान, फलादि। 24 घंटों का पूरा–पूरा समय विभाजन कर रखा था और उसका सख्ती से पालन करते थे– अन्यथा सोच–विचार के लिये उनके पास समय ही नहीं था, यही तो उत्तर दिया था कलकत्ते के युवक को जिसने महर्षि से प्रश्न किया था कि कामवासना ने उन्हें कभी सताया अथवा नहीं।

महर्षि के जीवनीकार देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने (पृष्ठ 570) एक घटना का उल्लेख किया है। एक दिन एक सेठजी आए, उनका दस वर्षीय पुत्र भी उनके साथ था। वह अत्यन्त लज्जालु था। किसी प्रकार महाराज ने उसे अपने पास बुलाया और उसे कहा कि तुम नित्य सुबह उठकर और हाथ–मुँह धोकर अपने माता–पिता को नमस्ते किया करो और पाठशाला जाते समय अपनी पुस्तकें स्वयं ले जाया करो, नौकर को मत ले जाने दो। "यदि मार्ग

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

एक नन्ही–सी कली – 'गुड़िया'

गुड़िया महज एक नाम ही नहीं बल्कि.....

● राजेन्द्र प्रसाद आर्य

तथाकथित सभ्य समाज की विकृत मानसिकता की एक प्रतीक बन चुकी है – "गुड़िया"।

सरकार की संवेदनहीनता का प्रमाण बन चुकी है – "गुड़िया"।

पुलिस और कानून–व्यवस्था के परिणाम का नाम है – "गुड़िया"।

देश की लचर और निष्प्रभावी न्याय की प्रतिबिम्ब है – "गुड़िया"।

"गुड़िया"।

एक नन्ही–सी मासूम–सी कली "गुड़िया"।

सिर्फ 5 साल की नन्ही सी "गुड़िया"।

बच्चियों में 5 साल की उम्र का मतलब होता है गुड़ियों के हाथ में एक "गुड़िया"।

5 साल की उम्र का मतलब होता है जिसमें अपनी माँ का दूध छोड़ रही होती है–"गुड़िया"।

5 साल की उम्र का मतलब होता है जिसमें अपने माँ–बाप के गोद में पुचकारी जाती है–"गुड़िया"।

5 साल की उम्र का मतलब होता है जिसमें अपनी तोतली बोली से सबको प्रफुल्ति करती है–"गुड़िया"।

5 साल की उम्र का मतलब वो होता है जिसमें न तो अपने शरीर का कोई ज्ञान होता है और न ही दुनियादारी का कोई ज्ञान होता है गुड़ियों में। पर इसी 5 साल की एक गुड़िया को दिल्ली के गांधीनगर इलाके के एक घर में 2 दरिन्दों द्वारा रौंद दिया जाता है, जिस वजह से वो आज भी मौत से संघर्ष कर रही है। सिर्फ कल्पना कीया जा सकती है कि क्या सब बीता होगा उसके साथ और कैसे वह सहन कर पाई होगी इस दरिन्दगी को। यह सिर्फ एक गुड़िया की बात नहीं है, मध्यप्रदेश के शिवनी में एक 4 वर्ष की गुड़िया के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया है। दिल्ली, जबलपुर, छिंदेवारा, अलीगढ़ की ही बात नहीं है, बल्कि पूरे देश के अनेकों हिस्सों में अनेकों गुड़ियाओं के साथ बलात्कार और सामूहिक बलात्कार के अनेकों मामले प्रकाश में आये हैं। बुलन्दशहर की एक और घटना प्रकाश में आई है जहाँ मात्र 20 दिन की एक गुड़िया के साथ बलात्कार किया गया। हे भगवान क्या हो गया है इस देश को जहाँ कुवारी कन्याओं को देवी की तरह पूजा जाता रहा है, वहीं आज उसके साथ इस तरह की वारदातें।

16 दिसम्बर को हुए दिल्ली में दामिनी रेप काण्ड के बाद, लोगों में जो आक्रोश और उबाल देखने को मिला, इसे देखकर लगा कि अब जनता जाग चुकी है और अब वो इसे सहन नहीं कर पाएगी, लेकिन 4 महीने के दरम्यान ही देशभर में बच्चियों के साथ जो अनेक घटनाएं सामने आ रही हैं, इसे देखकर लगता है कि लोगों का आक्रोश अब थम सा गया है तथा सरकार के जो आँसू थे वो भी घड़ियाली आँसू ही थे।

इस तरह की वारदातों के लिए दुराचार और दुष्कर्म तो छोटे शब्द हैं, हमें इसके लिए कोई अन्य शब्द ढुंढ़ना होगा क्योंकि :–

1. अब सिर्फ बलात्कार ही नहीं बल्कि सामूहिक बलात्कार किये जाते हैं जिसमें 1 से अधिक लोगों की संलिप्त होती है।

2. बलात्कार की अवधि भी सिर्फ एक बार नहीं बल्कि 1 दिन, 1 सप्ताह और महीने भर की भी होती है।

3. बलात्कार के लिए उम्र का भी कोई खयाल नहीं रखा जाता है। 4 वर्ष, 5 वर्ष की अथवा कितने ही वर्ष की वो क्यों नहीं हो।

4. बलात्कार के बाद बच्चियों के साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता है, जैसा कि इस गुड़िया के साथ हुआ अर्थात् मोमबत्ती और तेल की शीशी भी उसके पेट में डाल देना।

5. और सबसे बड़ी बात है उसकी हत्या। 4–5 वर्ष की बच्चियों के साथ रेप के बाद या तो वह स्वयं मर जाती है, नहीं तो उसे मार दिया जाता है साक्ष्य मिटान के वास्ते और मारकर उसे फेंक दिया जाता है, कहीं खेत में, कहीं झाड़ी में और कहीं नाली में।

बलात्कार का हमारे देश में कभी कोई स्थान नहीं रहा है। इनके कारनामे को देखकर तो आज रावण भी शर्मिंदा होगा क्योंकि सारी सामर्थ्य के बावजूद उसने माता सीता के साथ कोई भी अमियदित आचरण नहीं किया, सिर्फ बलात अपहरण को छोड़कर। पर आज के रावण तो अपहरण, बलात्कार और फिर उसकी हत्या भी कर डालते हैं, क्षणिक उन्मार के वास्ते। सुनते हैं इस देश में कभी हतया, लूट और इस देश की अस्मिता को रौंद डालने के उद्देश्य से कभी विदेशी आतताईयों के द्वारा बड़े पैमाने पर बलात्कार किया गया था, पर आज तो सारी सीमाओं का अतिक्रमण किया जा रहा है।

यह मामला कितना गंभीर है और किस तेजी से यह बढ़ता जा रहा है जरा इसे देखें:–

इस देश में प्रत्येक 20 मिनट में एक बलात्कार की घटना होती है।

वर्ष 2010–11 में इस देश में कुल 48,338 बलात्कार की घटनाएं हुई हैं।

सिर्फ मध्य प्रदेश में ही वर्ष 2011 में कुल 4,300 बलात्कार की घटनाएं हुई है।

पिछले 10 वर्षों में 336% बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि हुई है। यह एक नासूर बनता जा रहा है, जिसे खत्म करना ही पड़ेगा नहीं तो पूरा देश इस आग में झुलस जाएगा, क्योंकि प्रत्येक घर में एक गुड़िया है। ये वो घटनाएं हैं जो प्रकाश में आई हैं, इससे बहुत ज्यादा संख्या तो उन घटनाओं की है जिसे लोकलाज के भय से छिपा लिया जाता है।

क्या इसे रोका नहीं जा सकता? क्यों नहीं, इसे तो अवश्य रोका जा सकता है, लेकिन इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है जो हमारे सरकार के पास नहीं है। इराक, ईरान और नाईजीरिया में बलात्कारियों को लोगों द्वारा पत्थर से मारकर मौत की सजा दी जाती है। फिलीपीन्स में बलात्कारियों को जहर के इन्जेकेशन द्वारा मार दिया जाता है। सउदी अरब में तो बलात्कारियों का सिर ही कलम कर दिया जाता है, यही कारण है कि वहाँ के शेख दूसरे गरीब मुल्कों में जाकर जहाँ की कानून–व्यवस्था बहुत ही लचर है, यथा सोमालिया और भारत में जाकर होटलों में ठहरते हैं और फिर इनके लिए दलाल निकल पड़ते हैं अक्षत–यौवना गुड़िया की तलाश में और फिर वे शेख यही खेल खेलते हैं पैसे के बल पर। और जिस समय होटल में वातानुकूलित कमरों में ये गुड़िया चीत्कार मार रही होती हैं उनके माता–पिता नोट गिन रहे होते हैं अपने घरों में। अगर इसी तरह के कड़े कानून बनाकर और उसका कड़ाई से पालन किया जाए तो कोई कारण नहीं कि ये बलात्कार नहीं रूकें। हमारे समझ से तो इन बलात्कारियों का पौरुष अंग ही काट दिया जाए अथवा उसे निष्क्रिय कर दिया जाए ताकि वे जीवित तो रहें पर यौन सुख के लिए जीवनपर्यन्त लालायित रहकर पश्चाताप करें। और इस सजा के बाद उसके फोटो को देश भर में प्रसारित किया जाए, तो यह अविलम्ब रुक जाएगा।

पर इसे करेगा कौन? क्योंकि सरकार को न तो देश की चिन्ता है और न ही देशवासियों की, उसे तो लूट–खसोट से ही फुर्सत नहीं है। और रही पुलिस की बात तो पुलिस भी वहीं तक जाती है जहां तक कि उसके रास्ते में पैसे बिछे होते हैं। अपराध नियंत्रण तो दूर की बात है, पुलिस आसानी से एफ.आई.आर. भी दर्ज नहीं करती, उसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है, उत्तर प्रदेश के इटावा में 353 मामले की कोर्ट को पुलिस को निर्देश देना पड़ा तब जाकर पुलिस ने एफ.आई. आर दर्ज की पुलिस की निष्क्रियता का इससे बड़ा क्या उदाहरण हो सकता है, मात्र 4 महीने में 617 बच्चे गायब कर दिये गए हैं क्या उसे धरती निगल गई या आसमान। इस गुड़िया रेप केस में पुलिस ने पीड़िता के बाप को 2000/– रुपये भी रिश्वत दी चुप रहने के वास्ते। रही न्यायालयों की बात, तो न्यायालयों से न्याय मिलते नहीं बल्कि न्याय खरीदे जाते हैं जिसमें गरीब वर्ग असमर्थ रहते हैं। ध्यान रहे कि इस प्रकार की घटनाएं सिर्फ साधारण परिवारों, मुख्य रूप से गरीब परिवार के साथ ही होती हैं अतः जनता को स्वयं ही इससे लड़ने के लिए कमर कसनी होगी।

भारत एक धर्म प्रधान देश है, यहाँ लाखों मन्दिर हैं, इतने तो शिक्षालय भी नहीं हैं और हजारों धर्म प्रचार में आजीवन लगे रहते हैं। जिस समय गुड़िया को अमानवीय तरीके से रौंद दिया गया जिस वजह से वह 2 दिन तक मूर्छित अवस्था में तड़पती रही, वो रामनवमी का समय था। पूरे देश में रामनवमी की धूमधाम थी, सारे मन्दिरों को आकर्षक ढंग से सजाया गया था, कहीं रामधुन हो रहे थे, कहीं संकीर्तन और कहीं रामकथा इत्यादि ठीक उसी समय गुड़िया हमारी धार्मिकता को ही चुनौती दे रही थी। हमने लाखों की संख्या में जमीन पर मन्दिर उतार रखी हैं, लाखों लोगों ने अपने घरों में ही मन्दिर स्थापित कर लिये हैं पर दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि हम अपने मन को मन्दिर नहीं बना सके, यह सब इसी का दुष्परिणाम है।

भारत कभी दुनिया का शिरमौर्य रह चुका है, जिस वजह से पूरी दुनिया हमारे आगे नतमस्तक रही है, पर आज इन घटनाओं की वजह से दुनिया हमें घृणा की दृष्टि से देख रही होगी। हम स्वयं मुजफ्फरपुर (बिहार) के निवासी होने की वजह से शर्मशार हैं क्योंकि गुड़िया के अपराधी को भी मुजफ्फरपुर (बिहार) से ही बरामद किया गया है। अतः हम सभी को वैचारिक परिवर्तन के लिए कृत संकल्प होना पड़ेगा।

आर्य समाज, मुजफ्फरपुर

देश के वर्तमान जलसंसाधनों पर भयावह दबाव

पिछले दशकों की गंगा–कावेरी या ब्रह्मपुत्र व पूर्वी नदियों को जोड़ने की समन्वित परियोजना को हम क्यों भूल गए?

● हरिकृष्ण निगम

आज दुनियां की जनसंख्या छह अरब हो गई है जिसमें अगले दो दशकों में 120 करोड़ लोगों की वृद्धि होने का अनुमान है। यह आशंका जताई जा रही है कि उस समय तक प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता और आपूर्ति के क्षेत्र में भारतीय परिदृश्य तो और भी भयावह हो जाएगा।

गत तीस वर्षों में दुनिया में पानी की आपूर्ति आधी रह गई है। हो सकता है भविष्य के युद्ध, शायद अगले पांच वर्षों में ही, पानी के विवादों, एक तिहाई कम हो जाएगी। पानी की उपलब्धता को लेकर हों, आज से लगभग दस वर्ष पहले कल्पना भी नहीं की गई थी कि वह समय आएगा जब अनेक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन दुनिये में जल के बढ़ते अभाव और उसकी आपूर्ति के लिए गंभीरता से सोचेंगे। वैश्वीकरण के निरन्तर बढ़ते चरणों में बहुराष्ट्रीय उद्योगों का वर्चस्व पानी के निजीकरण की मांगों और उसकी कीमतों को तय करने के नए ढांचे सुझाने व ढालने के रूप में प्रकट होगा।

अगले दो से चार दशकों के बीच भारत की जनसंख्या दुगुनी होने का अनुमान है। वैसे यह इस बात पर निर्भर है कि जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम किस तरह लागू किए जाते हैं। उस परिदृश्य में पानी की बढ़ती मांग के बारे में सोचना भी मुश्किल है। विशेषज्ञों का कहना है कि सन 2025 में पानी की जरूरत 552 मिलियन क्यूबिक मीटर से 1050 बिलियन क्यूबिक मीटर पहुंच जाएगी। उस समय की पानी के अभाव की स्थिति देश में कैसी अराजकता पैदा कर सकती है, यह केवल जल–प्रबंधन से सम्बन्धित विशेषज्ञ ही समझ सकते हैं। यदि इसके लिए दूरगामी कदम आज से ही गंभीरता से नहीं उठाए गए तो सिंचाई व कृषि क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि साफ़ पेयजल के लिए भी सामाजिक संघर्ष एवं नए तनाव पैदा हो सकते हैं।

हमारे देश में आज 92 प्रतिशत पानी के उपलब्ध संसाधन कृषि में प्रयुक्त होते हैं जबकि उद्योग में तीन प्रतिशत और लगभग पांच प्रतिशत घरेलू उपयोग में लाए जाते हैं। जहां एक ओर 1947 में प्रतिव्यक्ति 5000 क्यूबिक मीटर साफ़ पानी प्रतिवर्ष उपलब्ध था। सन् 1997 में यह मात्र 2000 क्यूबिक मीटर प्रतिव्यक्ति प्रति वर्ष रह गया। अगले कुछ सालों में यह मात्रा घटकर 1500 क्यूबिक मीटर प्रतिवर्ष रहने का अनुमान है।

इसके अलावा भूमि की सतह के 70 प्रतिशत जल संसाधन घोर प्रदूषण की कगार पर हैं और भूमिगत जल के स्रोत भी जैवकीय और रासायनिक प्रदूषण के शिकार हो चुके हैं। इसका एक बड़ा कारण गत पांच वर्षों से कृषि क्षेत्र में रासायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग है जो जल आपूर्ति के स्रोतों में प्रविष्ट हो रहे हैं।

हाल में राष्ट्रसंघ की विश्व जल विकास की सर्वेक्षण रिपोर्ट में भारत को उन देशों में से एक माना गया है जहाँ पेयजल की समस्या अत्यन्त भयंकर रूप ले रही है। पेयजल की गुणवत्ता के आधार पर दुनिया के 122 देशों की सूची में भारत का स्थान 120वां है और उपलब्धता के सूचकांक पर 180 देशों की सूची में इसका स्थान 33वां है। जैसा ऊपर कहा गया है आगे आने वाले दिनों में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष जल की उपलब्ध मात्रा 1500 क्यूबिक मीटर रह जाएगी।

आज की स्थिति को समझने के लिए एक उदाहरण पर्याप्त होगा। महाराष्ट्र में सिंचाई के लिए उपलब्ध 70 प्रतिशत पानी गन्ने के खेतिहरों को उपलब्ध कराया जाता है जो राज्य का मात्र 30 प्रतिशत खेती के लिए प्रयुक्त जमीनी क्षेत्र है। क्या यह एक सामाजिक अपराध नहीं है। सरकार या तो बड़ी परियोजनाओं के लिए जल देती है या राजनीतिज्ञों द्वारा नियंत्रित शक्कर कोआपरेटिव संस्थानों की जमीन के लिए पानी की आपूर्ति स्थानीय क्षेत्रीय निहित राजनीतिक स्वार्थों के आधार पर देती है। देखते–देखते यही रुख क्षेत्रीय संदर्भ से राष्ट्रीय मुद्दे बन चुके हैं। आज अनेक राज्यों में अंधाधुंध जमीन के भीतर का पानी ट्यूबवेलों से निकालने के कारण भूमिगत पानी की सतह बहुत नीचे जा चुकी है। दूसरी ओर यह एक क्रूर व्यंग है कि देश सूखे और बाढ़ के प्रकोप से हर साल अनेक हिस्सों में जूझता रहता है।

इस भयावह परिदृश्य का एक हल देश की बड़ी नदियों को व्यवस्थित व व्यापक रूप से जोड़ने का कार्यक्रम है। इस विशाल योजना के लिए बड़े स्तर पर संसाधन जुटाने होंगे, योजना को पूरे करने में अनेक वर्ष लग सकते हैं और राज्यों की सहमति के अलावा पुनर्वास एवं पर्यावरण के नाम पर वातावरण के रूमानी संरक्षकों – एको–रोमन्टिक्स – द्वारा काफी बाधा डाली जा सकती है। देश की अधिकांश नदियां समुद्र में गिरती हैं और उन्हें एक–दूसरे से जोड़कर देश अपार लाभ उठा सकता है। बड़े बांधों और नदियों को जोड़ने के स्वप्न आज के नहीं हैं। सरदार पटेल, द्वारका प्रसाद मिश्र और स्वतंत्रता के बाद के कई बड़े राष्ट्रीय नेताओं ने इस विषय पर विशेषज्ञों से तकनीकी सर्वेक्षण भी करवाए थे पर आज जिस तरह देश की कुछ गैर सरकारी आन्दोलनकारी संस्थाओं या एन.जी.ओ.ज. ने पर्यावरण के नाम पर विदेशी सहायता के बल पर अभियान चलाया है वह चिन्ता का विषय है। नदियों को जोड़ने के मूल प्रश्न को नर्मदा विवाद की राजनीति प्रेरित बहस और सरदार सरोवर बांध के प्रकरण व उसके घटनाक्रम से भली–भांति समझा जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद के कुछ दूरदर्शी नेताओं ने उस समय भी यह अहसास किया था कि नदियों को जोड़ा जा सकता है और खासकर नर्मदा मध्य प्रदेश व गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ जैसे इलाकों में पानी के अभाव को दूर कर सकती है। यदि इस मुद्दे के समग्र रूप से गंगा–कावेरी या ब्रह्मपुत्र और पूर्वी क्षेत्र की नदियों से जोड़ने का समन्वित प्रयोजन हो तो यह निर्णय देश को खुशहाली के नए युग में ला सकता है। यदि देश की मात्र एक नर्मदा जैसी नदी के बारे में ही कुछ कर सकते तो यह देश के लिए एक दिशा निर्देशक हो सकता है।

नर्मदा भारत के हृदय मध्य प्रदेश के अमरकन्क से निकालकर पश्चिमी किनारे तक समुद्र में मिली है। सन् 1946 में ही अनेक परियोजनाओं की रूपरेखा बनाई गई थी पर सरदार सरोवर पर काम 1961 में शुरु हुआ था। कुल मिलाकर 30 बड़े और 3000 छोटे बांध बनने थे। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले की महेश्वर परियोजना और इन्दिरा सागर बांध भी इसी कड़ी में बनने हैं।

आज बहुत से लोगों को याद नहीं है कि पण्डित द्वारका प्रसाद मिश्र जो भारतीय राजनीति के चाणक्य श्री कहे गये हैं और प्रसिद्ध विचारक मुख्यमंत्री के रूप में मशहूर थे, ने स्वतंत्रता के पहले से ही नर्मदा घाटी परियोजना में रूचि दिखाई थी। मार्च 1947 में उन्होंने अन्तरिम सरकार में तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल को लिखा था कि यह परियोजना इतनी महत्वपूर्ण है कि इस पर काम करना जल्दी से जल्दी आवश्यक है। एक पारसी इंजीनियर जे.एम. वाचा ने इस परियोजना की रूपरेखा बनाई थी। उन्होंने इस परियोजना के नैसिद्धासन सम्बन्धी पक्ष को भी छुआ था। पण्डित मिश्र उसके विचारों से इतने प्रभावित थे क्योंकि नर्मदा को समुद्री जहाजों को भरूच होते हुए जबलपुर तक के लिये नौ संचाल्य या 'नेवीगेशन' बनाया जा सकता था जिसकी अरब सागर के मुहाने से 724 मील की दूरी थी। श्री मिश्र को उत्साह के पीछे तकनीकी सजगता और क्रान्तिकारी दृष्टि भी थी जिसके कारण उन्होंने योजना का वैज्ञानिक रूप से सर्वेक्षण भी करवाया था। सिर्फ उनकी चिन्ता थी कि इसके लिये आवश्यक धनराशि कैसे जुटाई जाएगी। यह परियोजना नवाब अली नवाज़ जंग ने भी देखी थी, जो एक प्रसिद्ध इंजीनियर थे।

पण्डित द्वारका प्रसाद मिश्र ने 12 मार्च, 1947 को सरदार पटेल को एक पत्र भी लिखा था जिसके साथ जे.एम.वाचा का 20 अप्रैल, 1947 की योजना के सम्बन्ध में एक विस्तृत पत्र भी संलग्न किया गया था। ये दस्तावेज ऐतिहासिक महत्व के हैं और नर्मदा परियोजना पर उठाये आज के विवादों के मुंहतोड़ जवाब भी हैं।

यह एक विशाल परियोजना बननी थी जिसमें, उद्योग, जल मार्ग द्वारा यातायात और खनिज पदार्थों के विकास की भावी रूपरेखा थी। क्योंकि नर्मदा घाटी कृषि और खनिज सम्पत्ति के लिये मशहूर थी, मात्र 7 वर्षों में इसे क्रमबद्ध रूप से पूरा करना था। सिर्फ मध्य प्रदेश और गुजरात को नदी के दोनों ओर की जमीन मुहैया करानी थी इसके लिये जे. एम. वाचा को स्वयं रवि शंकर शुक्ल के एक विशेष पत्र के साथ पण्डित नेहरू और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पास भी भेजा गया था। नवाब अली नवाज़ जब हैदराबाद में रहने वाले विख्यात इंजीनियर थे जो दामोदर घाटी योजना और तुंग भद्रा बांध में सलाहकार की हैसियत से काम कर चुके थे। जे. एम. वाचा को उसके पास भी भेजा गया था। नर्मदा के सतपुड़ा की तंग घाटियों के बहाव की प्रक्रिया का भी अध्ययन किया गया था। और यह भी निष्कर्ष निकाला गया था कि कैसे बिजली उत्पादन भी किया जा सकता है। सारे देश के विकास और सम्पन्नता की कुँजी इस परियोजना में छिपी थी क्योंकि सस्ता जल यातायात, बड़े भूभाग को समुद्र से जोड़ने से निर्यात की सम्भावना, खनिज उद्योगों और बिजलीघरों के बनने से उस समय का सी.पी. या सेन्ट्रल प्राविन्स और गुजरात का क्षेत्र देश की अगुआई कर सकता था (श्री मिश्र के शब्दों में सिर्फ दो प्रान्तों के अलावा यह परियोजना देश में एक नई दिशा खोल सकती थी)।

दुनिया के अमेरिका सहित सभी देशों ने पिछली एक शताब्दी में बड़े से बड़े बांध बना लिये हैं। हूवर बांध या टेनेसी घाटी परियोजना के विकाशशील देशों के लिये जल संसाधन नियंत्रण के लिये उदाहरण मानी जाती थी, पर भारत– जैसे देश में बड़े बांधों के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारणों पर शक होता है। इसीलिए यहां के स्वैच्छिक संगठन उनके हाथ में क्यों खेल रहे हैं। इस पर सन्देह होना स्वाभाविक है।

ए–1002 पंचशील हाईट्स महावीर नगर,
कान्दिवली, मुंबई–67

कार्य-कारण

● राज कुकरेजा

कार्य-कारण का गहरा सम्बन्ध है, कार्य होगा तो उसका कारण भी अवश्य ही होगा, देश में अराजकता, अनीति, अव्यवस्था है, राजनीति बहुत ही निकृष्ट स्तर की हो गई है, प्रातः काल की दिनचर्या समाचार पत्रों से आरंभ होती है, ये समाचार पत्र मुख्य पृष्ठ से अंतिम तक अनाचार और आपराधिक घटनाओं से भरे मिलते हैं, सब ओर लूट मची है, पैसे के लिए उपद्रव हो रहे हैं, कहीं चोरियाँ हो रहीं हैं, राह चलती स्त्रियों के गलों की जंजीरें झपटी जा रही हैं, बलात्कार हो रहे हैं, बेटियां न गर्भ में, न ही सड़क पर सुरक्षित हैं, प्रायः राजनेता भी भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हैं तो धार्मिक संस्थाएँ भी अछूती नहीं रहीं हैं। शिक्षा, चिकित्सा, न्याय जैसे प्रतिष्ठित माने जाने वाले व्यवसाय भी भ्रष्टाचार की लपेट में हैं। अब अमानवीय और पाशविकता की घटनाएँ सीमा को लाँघ रही हैं। अभी पिछले दिनों पूरे देश को शर्मसार करने वाली गैंगरेप की घटना, जिसने पूरे विश्व को हिला दिया। युवा वर्ग ने आक्रोश में आकर सड़कों पर प्रदर्शन व आन्दोलन किये। मीडिया ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सारी राजधानी के हिलने के साथ-साथ राजनेता भी हिल उठे और युवावर्ग व पीड़िता के परिवार के प्रति सहानुभूति दिखाने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी आधी रात को पीड़िता के शव को लेने एयरपोर्ट पहुँचे, समाचार तो यह भी आया है कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी पीड़िता के परिवार को मिलने उनके घर गये और एक घंटा वहाँ रुके, बलात्कार जैसे कुकर्म तो रोज़ हो ही रहे हैं, इन परिवारों की सहानुभूति के लिए क्या हो रहा है, कोई नहीं जानता।

अत्यंत ही निन्दित कार्य और कुकर्मों से समाज के सभी वर्ग भयभीत, परेशान व अशान्त हो रहे हैं, सरकार सांत्वना दे रही है कि सुरक्षा के कड़े-से-कड़े कानून बनाये जाएंगे किन्तु नैतिक मूल्यों की कोई बात नहीं हो रही है, हम ऋषि दयानन्द जी के 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास को नहीं पढ़ते, पढ़ते भी हैं तो भूल जाते हैं, उन्होंने तो स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जब तीन उत्तम शिक्षक होते हैं अर्थात् एक माता, दूसरा पिता, तीसरा आचार्य, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य और संतान भाग्यशाली होती है, जिस के माता-पिता धार्मिक विद्वान होते हैं। आचार्य' जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ाए और स्वयं आचारयुक्त हो तभी उसके शिष्य सदाचारी होंगे। प्रश्न उठता है कि क्या हमारा कुल धन्य है और हमारी सन्तान भाग्यशाली है? यदि नहीं तो भूल का सुधार यहीं करें। आज माता-पिता स्वयं महत्त्वाकांक्षी हैं और सन्तान को भी महत्वाकांक्षी बना रहे हैं। अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बनाना चाहते हैं और जैसे-तैसे बना भी रहे हैं। चाहते हैं कि बच्चे उच्च शिक्षा व अधिक शिक्षा के लिए व अधिक पैसा कमाने के लिए विदेश जाएँ तो बच्चे जा भी रहे हैं। आज हमें बेटियों पर गर्व है। हर क्षेत्र में ऊँचाइयों को छू रही हैं। सिद्ध कर रही हैं कि यदि उन्हें भी अवसर मिले तो वे भी लड़कों से कम नहीं हैं परन्तु नादान बेटियाँ यह नहीं जानती कि जीवन का क्षेत्र जिसमें उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है, वह उपेक्षित हो रहा है, **"माँ सबका स्थान ले सकती है पर उसका स्थान कोई नहीं ले सकता, "बच्चे को संस्कारित करने का दायित्व यद्यपि माता-पिता और आचार्य तीनों का है, लेकिन माँ का स्थान सर्वोपरि है,"** जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी ओर से नहीं। बालक के अंगों के विकास के साथ-साथ संस्कार भी विकसित हो रहे होते हैं। माता-पिता अपने मन में यह दृढ़ विश्वास बना लें कि बालक को पैसे की अपेक्षा समय की आवश्यकता है। अपने बच्चों को पैसे नहीं दोगे तो वह कुछ पल के लिए रो सकता है परन्तु समय नहीं दोगे तो आप जिन्दगी भर के लिए रो सकते हैं। कहा भी जाता है कि **"योग्य माता-पिता जब सही लालन-पालन करते हैं, तभी संतान योग्य बनती है, अन्यथा अरबपति और सम्राटों की सन्तान तक बिगड़ी रहती है,"** माता-पिता के वात्सल्य से वंचित बालक जब बड़े हो जाते हैं तो वे भी माता-पिता को अर्थ की तुला पर तोलने लगते हैं, अर्थ का पलड़ा भारी लगता है, तो माता-पिता की उपेक्षा करने लगते हैं। माता-पिता को अपने जीवन की संध्या वेला वृद्ध आश्रमों में गुजारने को विवश हो पड़ता है। दूसरी ओर अध्यापक वर्ग अब आचार्य नहीं रहा। स्वयं आचार का पालन नहीं करते तो बालकों से आचार की क्या अपेक्षा रख सकते हैं, इन अध्यापकों को केवल वेतनभोगी ही कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज की शिक्षा में संस्कारों की बात तक नहीं की जाती हैं, यद्यपि बुद्धिजीवी शिक्षाविद् हमेशा से ही शिक्षा में परिवर्तन की बातें करते आ रहे है। पर नैतिक शिक्षा की बात नहीं करते है। तीसरी ओर बालक के भटकाव में समाज भी अपना योगदान दे रहा है। पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध बिखर रहे हैं। आज सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध दूरदर्शन से है। दूरदर्शन हर परिवार का अभिन्न अंग बन गया है। दूरदर्शन से होनेवाले लाभों से इन्कार नहीं किया जा सकता परन्तु कुछ चैनलों द्वारा व्यापार जगत अपना सामान अश्लील विज्ञापनों के द्वारा बेच रहा है। यह मनुष्य की वासनाओं और भावनाओं को भड़काने का काम कर रहे हैं। फिल्मों के द्वारा भी अश्लीलता, हिंसा, क्रूरता व बर्बरता के दृश्य चित पर अपने संस्कारों की छाप छोड़ रहे हैं। जिससे व्यक्ति स्वार्थी, संकीर्ण और संवेदनाशून्य होते जा रहे हैं। कई चैनलों पर कुछ स्वार्थी लोग भ्रमजाल में लोगों को फँसा रहे हैं। जिससे ये लोग अन्धविश्वासी, भाग्यवादी बन कर समाज को हानि पहुँचा रहे हैं।

यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है कि जलती अग्नि पर डालें तो घृत और चाहें कि अग्नि शांत हो जाए। पेड़ तो बोए बबूल का और चाहे इस पर लगे आम। यह सृष्टि के अटल नियम के विरुद्ध है। आम के मीठे और स्वादिष्ट फल के लिए आम ही का पेड़ लगाएँ। (अपने बच्चों को सुसंस्कार दें) आम के फलों का स्वाद लें और इसकी घनी छाया में अपने जीवन की सन्ध्या वेला को सुख-शान्ति से व्यतीत करें। वृद्ध आश्रमों का सहारा न लेना पड़े। माता-पिता, आचार्य और समाज अपने-अपने उत्तरदायित्व को समझें और सब अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें। मुख्य भूमिका माता को ही निभानी होती है, माता ही निर्माता कही जाती है, एक माता ने प्रश्न किया कि कौन माता चाहती है कि उसकी संतान अपराध करे। माता चाहती तो नहीं है परन्तु बालक को समझाती भी तो नहीं है। एक दृष्टांत याद आ रहा है। बालक स्कूल से अपने साथियों का छोटा-मोटा सामान चुराकर घर लाने लगा। माँ जानकर भी अनजान बनी रही और बालक का हौसला बढ़ता गया। छोटी चोरियाँ बड़ी चोरियां बनती गई तथा बड़ी चोरियों ने उसको एक बहुत बड़ा अपराधी बना दिया। एक दिन वह पकड़ा गया। न्यायाधीश ने उसके अपराधों की गम्भीरता को देखते हुए फाँसी की सज़ा सुनाई। फाँसी से पूर्व अपराधी ने माँ से मिलने की इच्छा व्यक्त की। माँ को कोर्ट में लाया गया तो अपराधी बोला कि जज साहिब फाँसी मेरे स्थान पर मेरी माँ को दीजिए। जब साहब चौंककर बोले-क्यों? तो अपराधी ने जवाब दिया कि जिस दिन मैंने पहली चोरी की थी यदि उस दिन माँ ने ताड़ना की होती तो आज मेरी यह दुर्दशा न होती।

कार्य-कारण के सम्बन्ध को समझें। कारण का निवारण करने का कार्य पर भी निवारण हो जाता है, बालकों को सुसंस्कृत बनाने की आवश्यकता है। तभी हमारा समाज श्रेष्ठ बन सकता है। अपने बच्चों को बाल्यकाल से ही उन्हें चरित्र निर्माण की व नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। जो व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं, वही व्यवहार हम दूसरों के साथ करें। सरकार की ओर से ही दंड का भय अपराधों को कम कर सकता है। सरकार अपराधियों को कठोर दंड देने के जो कड़े कानून बनाती है उनका पालन भी बड़ी सख्ती से होना चाहिए अन्यथा कानून केवल कागजों पर ही धरे के धरे रह जाएंगे और अपराधी स्वच्छन्द भाव से अपराध करते रहेंगे। समाज को अपराधमुक्त करना आसान काम नहीं है। फिर भी अपराधियों की संख्या, कारण को हटा देने से कम हो ही जाएगी। आइये हम सब मिल कर प्रयास करें।

786/8, अर्बन एस्टेट, करनाल
132001, हरियाणा

☞ *पृष्ठ 3 का शेष*

घोर घने जंगल ...

मेरे सहायक बन जायें।'

ये इन्द्र, प्रजापति, सोम, सविता और अग्नि परमात्मा से भिन्न कोई देवी-देवता नहीं, अपितु परमात्मा के गुणों के नाम हैं। भाव यह है कि परमात्मा के ये सभी गुण धन से धन को बढ़ाने में मेरी सहायता करें।

परन्तु यह वेद-मन्त्र है न ? इसमें एक बड़ी मनोरंजक बात भी है; वेद के प्रत्येक मन्त्र में यह बात विद्यमान रहती है। किसी भी मन्त्र में यदि कोई उपदेश दिया जाये या प्रार्थना की जाये, यदि किसी इच्छा को प्रकट किया जाये तो उसमें उसकी चाबी भी विद्यमान रहती है। उसी में यह भी बता जाता है कि यह इच्छा या प्रार्थना किस प्रकार पूर्ण होगी। इस मन्त्र में भी यह चाबी विद्यमान है। पूर्वार्द्ध में इच्छा या प्रार्थना या प्रार्थना है। दूसरे भाग में उसकी चाबी। इन्द्र का अर्थ है सबसे बड़ा। संकेत यह है कि ऐ मानव! यदि तू इच्छा पूर्ण करना चाहता है, अपने धन में निरन्तर वृद्धि चाहता है तो सबसे बड़ा बनने की इच्छा को लेकर आगे बढ़। जहाँ तक पहुँच गया है, वहीं रुक न जा, बैठ न जा, खड़ा न हो जा, अपितु सबसे बड़ा बनने का प्रयत्न कर। प्रजापति का अर्थ है पालन करनेवाला; जो प्रजा का, दूसरे मनुष्यों का और प्राणियों का पालन करता है वही प्रजापति है। संकेत यह है कि अपना पेट

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

☞ पृष्ठ 5 का शेष

6,9,11

में कोई स्त्री तुम्हें मिल जाए तो उसकी ओर दृष्टि जमाकर मत देखो, अपनी दृष्टि नीची कर लो नहीं तो उस स्त्री की आकृति तुम्हारे मन में घुसकर एक प्रकार की उष्णता उत्पन्न करेगी और तुम्हें धातुक्षीणता का रोग हो जाएगा जिससे तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा।"

गौर फरमाइए महर्षि दयानंद ने यह उपदेश 'दस साल' के लड़के को दिया। यह मानना मुश्किल ही होगा कि इस आयु का बालक कामवासना का क, ख, ग भी जानता होगा। फिर भी महर्षि को चिन्ता थी कि स्त्री–पुरूष के नेत्रों के मिलने से कामवासना की छवि बालक के मन पर भी बैठ सकती है।

आज हम कहाँ हैं? दिन–रात सेक्स परोसा जा रहा है। पूरी बाजू के ब्लाउज और साड़ियों से ढंकी तन वाली फिल्मी हीरोइनें अब दो चिन्दियों में आ गई हैं। टी.वी. चैनल्स पर भी यही सब कुछ देखने को मिल रहा है। इस पर तुर्रा यह कि आइटम सॉंग (item song) के नाम पर फिल्मों में वह सब कुछ परोसा जा रहा है जो वैश्यालयों में भी फिल्मों से ही पहुँचता है। कुछ बानगी देखिए:–

1. मुन्नी बदनाम हुई यार तेरे लिये
2. बीड़ी जलाइले, जिगर से पिया, जिगर मा बड़ी आग है।
3. चोली के पीछे क्या है?
4. शीला की जवानी।

जब चौबीसों घण्टे, सिनेमा के पर्दे और टी.वी. पर यह परोसा जा रहा हो तो हम कैसे उम्मीद करें कि बच्चे गायत्री मंत्र का जाप करेंगे?

अपवादों को छोड़कर हम सामान्य जन मांसभक्षी (नारी) हो गये हैं। नई पीढ़ी के युवक–युवतियों को; युवावस्था की दहलीज पर खड़े हुए बालक–बालिकाओं को इन्टरनेट के माध्यम से पूरा कामशास्त्र, देशी–विदेशी, मय रतिक्रियाओं के जीवित दृश्यों के साथ उपलब्ध हैं। अब मोबाईल पर भी इन्टरनेट उपलब्ध है। लुक–छुप कर, डरकर देखने की जरूरत नहीं है। कभी भी देखा जा सकता है।

कामवासना खुद आग है, उसमें घी डालने वाली एक दो–बातों का उल्लेख और करूँगा। केन्द्रीय सरकार आन्दोलनों के आगे घुटने टेककर बलात्कार के विरूद्ध अध्यादेश लाई और फिर फटाफट संसद में कानून पारित करा दिया। न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्य सरकारें "नशाबन्दी" के लिए सख्त कदम उठाने को तैयार हैं। कारण स्पष्ट है कि यही मद ऐसा जिसमें अरबों रुपये की आय होती है और इस मद पर टैक्स बढ़ाने के विरूद्ध कभी कोई जन आन्दोलन नहीं होता। यही स्थिति धूमपान की भी है। शासन ने अपने उत्तरदायित्व की इतिश्री वैधानिक चेतावनी– "धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है" अंकित कराकर दे दी। रही भोजन की बात उत्तर भारत में कचौड़ी, समोसे एवं अन्य गरिष्ठ भोजन की दुकानों की भरमार है। मॉंस–मछली युक्त पकवान व फास्ट फूड जमकर उपलब्ध हैं और जमकर खाये जाते हैं। पढ़े–लिखे युवा वर्ग में 'रेव पार्टियों' का प्रचलन तीव्रता से बढ़ा है और बढ़ रहा है। आज भी युवा पीढ़ी फिल्मी सितारों को अपना ICON आदर्श मानती है इसलिए बैगपाइपर शराब का विज्ञापन करते हैं, अजय देवगन और कामोत्तेजक दवा रिवाइटल का सलमान खान। स्थानीय समाचारपत्रों में कामवृद्धि में सहायक तेल और अन्य दवाइयों के विज्ञापन भरे रहते हैं। रही ड्रग्स–नशीली दवाइयों की बात। उसका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैला है। खिलाड़ी भी इनका उपभोग करते हुए समाचारों में आये दिन उपलब्ध रहते हैं।

अब मैं उन समाचारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा जिन्होंने मेरी विचारतंत्री को जड़ से हिला दिया, और इस विषय पर लिखने को मजबूर किया।

1–टाइम्स ऑफ इण्डिया, दिल्ली 31.12.2012 तथा दैनिक भास्कर ग्वालियर के 31.12.2012 में समाचार प्रकाशित हुआ है कि महाराष्ट्र के थाने जिले के डॉम्बीविली नगर के पुत्र व पिता को 19 वर्षीय पुत्री के साथ लगातार दो वर्ष तक दुष्कर्म करने के कारण गिरफ्तार किया गया।

2–नई दुनिया, ग्वालियर 6 मार्च 2013 – रात्रि में प्रसूति के लिये ले जाई जा रही 63 वर्षीय नर्स के साथ 4 लोगों ने बलात्कार किया।

3–नई दुनिया, ग्वालियर 7 मार्च 2013 नाबालिग से किया पाँच नाबालिग छात्रों ने दुष्कृत्य। छात्रा 13 वर्ष, दुष्कृत्य करने वाले छात्र 11 से 14 वर्ष।

4–15 वर्षीय किशोरी से एक साल तक दैहिक शोषण किया एक 23 वर्षीय युवक ने।

5–मध्य प्रदेश में 5 हजार लड़कियां गायब।

6–उत्तर भारत में सुरक्षित नहीं महिलाएं।

7–7 मार्च 2013 को ही रात्रिकालीन 9:30 बजे के बुलेटिन में बताया गया कि दिल्ली में वर्ष 2012 में 206 रेप प्रकरण दर्ज हुए। पिछले 24 घंटों में 8 रेप यानी प्रतिदिन 4 रेप का औसत दिल्ली का ही है और एक जनवरी से 15 फरवरी 2013 तक 81 प्रकरण दर्ज हुए।

8–आज ही 4 अप्रैल 2013 को सभी चैनलों पर रात्रिकालीन न्यूज बुलेटिन में यह समाचार आया कि गुड़गाँव–हरियाणा का 4–5 वर्षीय करोड़पति ट्रांसपोर्टर पिछले तीन वर्ष से अपनी सोलह वर्षीय पुत्री के साथ यौनाचार करता रहा। विद्यालय की प्राचार्या को सुबकते हुए लड़की ने आपबीती सुनाई। प्राचार्या की शिकायत पर पुलिस ने जाँच–पड़ताल की और पिता को गिरफ्तार किया।

देश की जनसंख्या 120 करोड़ से भी बढ़ गई है। सही आँकड़े प्रस्तुत करना मुश्किल है, फिर भी 50–60 करोड़ के लगभग युवक–युवतियाँ, नई सोच–कामवासना नियंत्रण (ब्रह्मचर्य–वीर्यरक्षा, सैक्स से परहेज) को एक टैब्बू– दकियानूसी विचार समझते हैं। सफलतापूर्वक सैक्सुअल लाइफ बिताई जा सकती है, यह कार्य व्यापार महानगरों में काफी लम्बे समय पूर्व से धड़ल्ले से चल रहा है। कन्डोम व पिल्स का प्रचलन वैवाहिकों से ज्यादा बिन ब्याहों में है। मध्यस्तरीय नगर भी इससे अछूते नहीं हैं। हमारे ग्वालियर में ही यूनिवर्सिटी के बाहर की चाय आदि की दुकानों के पिछवाड़े मौज–मस्ती करने के अड्डे बन हुए थे जिनका भंडाफोड़ कुछ वर्षों पूर्व हुआ था। अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, बहुत बड़ा वर्ग है जो रोजी रोटी की जुगाड़ में पूरी जिन्दगी खपा देता है। नैतिकता–अनैतिकता उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाती। उद्याम कामवासना का नियंत्रण करना चाहिये, उनकी समझ से बाहर की बात है।

यह है समस्या की जमीनी हकीकत। इसके काध पक्ष की चर्चा यदा–कदा होती रहती है। शरीर का कैन्सर व्यक्तिगत होता है– समाज का कैन्सर अत्यधिक विस्तृत 50–60 करोड़ में फैलता हुआ। बुरी तरह त्रसित समाज इससे मुक्ति के लिये फड़फड़ा रहा है। भारतीय समाज के उस वर्ग को जिसमें बुद्धिजीवी, विद्वान व संन्यासी आते हैं, सोचना चाहिये कि इस क्षेत्र में उनका ही सर्वोपरि दायित्व है। संगठित कर जनजागरण के कार्यक्रम–चलाने हैं। शिक्षा में नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिए। हाईस्कूल की शिक्ष तक उन्हें बुराइयों, अपराधों के परिणामों के बारे में सजग करना चाहिए। मेरी समझ में अब तक ऐसी किसी पहल का श्रीगणेश भी नहीं हुआ है, निकट भविष्य में संभावना कम ही दिखती है। जैसा चल रहा है, चलने दो। हमें क्या पड़ी? यही सोच आम आदमी की है और विद्वानों व संन्यासियों की भी।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, 474001 (म.प्र.)

☞ पृष्ठ 8 का शेष

घोर घने जंगल ...

भरने के लिए, अपने ही सुख के लिए धन कमाने की इच्छा मत कर, अपितु, दूसरों की पालना कर, उनकी रक्षा कर, उनकी कर, उनकी सहायता कर। सविता का अर्थ है जीवन देनेवाला, सुख और कल्याण के लिए प्रेरणा देनेवाला, गिरे हुए को उठाने–वाला, रोगी को आरोग्य प्रदान करनेवाला, निर्बल को बलवान बनानेवाला। भाव यह है कि यदि धन–उपार्जन करना चाहते हो तो दूसरों की मौत मत बनो, उनका जीवन बनो; उन्हें नीचे गिराने का नहीं, ऊपर उठाने का प्रयत्न करो; उन्हें कुपथ पर न ले–जाकर कल्याण की ओर ले–जाने का प्रयत्न करो। सोम का अर्थ है चंचलता और बेचैनी से दूर, प्रेम और शान्ति की वृष्टि करनेवाला। भाव यह है कि यदि धन कमाना चाहते हो तो दूसरों से प्यार करो, उनके लिए शांति उत्पन्न करो, उनके हृदय में आग न लगाओ, उनसे घृणा न करो, ईर्ष्या और द्वेष के मार्ग पर न चलो, राक्षस न बनो, सविता बनो। और अन्त में अग्नि का अर्थ है 'अग्रणी'– आगे बढ़ने वाला, ऊपर उठनेवाला। संकेत यह कि आगे बढ़ने और ऊपर उठने की भावना को लेकर काम कर, पीछे जाने का प्रयत्न न कर। नीचे न गिर! उठ, चल और आगे बढ़!

इन पाँच गुणों को जो व्यक्ति अपने अन्दर धारण करेगा वह धनवान् बनेगा अवश्य। उसके धन में निरंतर वृद्धि होती रहेगी, कभी घाटा नहीं आयेगा।

यह है धन के सम्बन्ध में वेद का दृष्टिकोण। अब सोचकर देखिये कि यदि धन कोई निकम्मी या बुरी वस्तु होती तो वेद में उसके लिए प्रार्थना क्यों की जाती? परन्तु जैसा मैंने पहले कहा, धन कोई बुरी वस्तु नहीं। उसका अनुचित प्रयोग उसे बुरा बना देता है; उसका उचित प्रयोग उत्तम बना देता है। स्वयं वह उस अंगूर की भाँति है जिसे खाकर आप अमृत–जैसा स्वाद भी ले सकते हैं और उसकी शराब बनाकर अपने मस्तिष्क का बेड़ा भी डूबा सकते हैं।

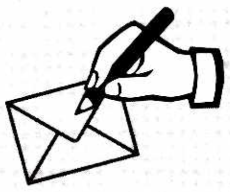

पत्र/कविता

विषमस्थितियों में ऐसी हो हमारी जीवन दृष्टि

"अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो
मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः।।"
(अथर्व 19/51/1)

"अहम् अयुतः" मैं अजेय हूँ, सभी प्रशंसा करते।
विषमस्थितियों के अवरोधक मुझे रोक नहि सकते।।
"अयुतं मे आत्मा" मेरी आत्म शक्ति है अद्भुत।
जो चुनौतियों को चुनौतियां बन कर देती चित।।
वह अजेय है, **'अच्छेद्योऽयम्'** जिसे उपनिषद् कहते।
कुसुमायुध के विषयवाण भी जिसे छेद नहि सकते।।
"अयुतं मे चक्षुः" अजेय है मम नयनों की शक्ति।
निंदनीय कुत्सित दृश्यों में उनकी है न प्रवृत्ति।।
"अयुतो मे श्रोत्रं" हैं मेरे कान अजय, यशधारी।
उन पे नहि हावी हो सकती बातें शब्द विकारी।।
पर निंदा अरु विषय–वासना के स्वर उनसे आकर।
जब टकराते, परिवर्तित होते तत्क्षण टकराकर।।
"मे प्राणः अयुतः" हैं मेरे प्राण अजय, ऊर्जस्वित।
जब जब लेता श्वास, शक्ति वह करती रहती वर्धित।।
"मेऽपानो अयुतः" अपान जो श्वास बहिर् में करता।
वह अजेय है, सब अंगों में व्याप्त व्याधि की हर्ता।।
"मे व्यानः अयुतः" है मेरा व्यान अजय अनिन्दित।
जो सब तन में घूम शक्ति–ऊर्जा करता संवर्धित।।
इस प्रकार मैं पूर्ण रूप से हूँ अजेय अनिन्दित।
इसीलिये प्रभु कृपा प्राप्त कर रहता हूँ आनंदित।।
जब जीवन में विषमस्थितियाँ किसी भाँति की आएँ।
तो हम ऐसे सबल विचारों को मन माँहि जगाएँ।।
अपने आपे, आत्म, इन्द्रियाँ, सर्व प्राण ऊर्जा से।
प्राणिमात्र के हित संवर्धक विशद कर्म जो करते।।
जगत नियंत्रक से जुड़कर के, वे अजेय हो जाते।
उनका जीवन पथ विषमस्थिति के रोड़े रोक न पाते।।

दयाशंकर गोयल
1554/ डी. सुदामा नगर
इंदौर पिन–452009 (म. प्र.)

मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान के स्रोत, कुरान बाईबिल आदि नहीं

वेद हो ईश्वरीय ज्ञान की कुंजी है। अर्थात सम्पूर्ण विश्व को नियम एवं धर्मानुसार कार्य करने का संविधान है। सृष्टि रचना के आदि में परमात्मा ने उन ऋषियों को वेद ज्ञान का प्रकाश दिया जिनके कर्म पवित्र व श्रेष्ठ थे।

1. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में ही मानव उत्पत्ति के साथ दिया जाना चाहिए क्योंकि ज्ञान की आवश्यकता तभी होती है जब मानव पूर्णतया अज्ञानी होता है। वह समय सृष्टि काल ही है। अतः ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाना अनिवार्य है। इस कसौटी पर मात्र वेद को छोड़कर अन्य कोई खरा नहीं उतरा। जब हम कुरान का अवलोकन करते हैं तो उसमें बाईबिल का वर्णन मिलता है। जब बाईबिल का अवलोकन करते हैं तो उसमें चबुतर का और चबुतर में तोरेत का और तोरते में जिन्दावस्था का,जिन्दावस्था में वेद का वर्णन मिलता है। परन्तु वेद में अन्य किसी का भी वर्णन नहीं मिलता। इस से वेद की प्राचीनता सिद्ध है।

2. दूसरी कसौटी यह है कि मानवीय भाषा की उत्पत्ति उसी ज्ञान के द्वारा हो। वेद के अतिरिक्त अन्य कोई प्रामाणित नहीं है। क्योंकि कुरान आदि के पूर्व इनकी भाषाएँ विद्यमान थीं। परन्तु वेद से पूर्व कोई भाषा विद्यमान नहीं थी।

3. ईश्वरीय ज्ञान की तीसरी कसौटी है। वेद का सृष्टि क्रम के अनुकूल होना है। वेद और सृष्टि एक ही सत्ता, परमात्मा के दो विभिन्न कार्य हैं। दोनों में आपस में समानता पाई जाती है। जब कि अन्य बाईबिल आदि में सृष्टिक्रम के विपरीत बातें पाई जाती हैं।

4. ईश्वरीयज्ञान की चौथी कसौटी यह है कि वह केवल ज्ञान या विद्या की पुस्तक होनी चाहिए जबकि अन्य सभी में इतिहास कहानी एवं किस्से भर पड़े हैं।

5. पाचवाँ प्रमाण यह है कि वह किसी जाति या देश विशेष की सीमाओं से बँधा नहीं है। वह सार्वकालिक सर्वभौमिक तथा सार्वजनिक है जबकि अन्य इन बातों के विपरीत हैं।

6. ईश्वरीय ज्ञान की छटी कसौटी सह है कि वह ज्ञान समस्त ज्ञान/विज्ञान का आदि स्रोत हो अर्थात् जिस मे मानव के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान–विज्ञान और विद्याएँ मूलरूप से विद्यमान हों।

7. सातवीं कसौटी यह है कि उस में मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की पूर्ण योजना व कार्यक्रम विद्यमान हो। इस विषय में मात्र वेद ही खरा उतरता है अन्य नहीं।

8. आठवीं कसौटी यह है कि वह ज्ञान ईश्वर के गुण कर्म–स्वभाव के अनुकूल हो और उसमें ईश्वर का वर्णन भी ईश्वर के गुण कर्म, स्वभाव के अनुरूप ही होना चाहिए। क्योंकि अन्य पुस्तकों में तो ईश्वर की आत्मा को पानी पर तैरते हुए बतलाया गया है। किन्हीं में चौथे आसमान पर, किन्ही में क्षीर सागर अथवा कैलाश पर्वत पर होना बतलाया गया है। जबकि वेद ईश्वर को सर्वव्यापक मानता है।

अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान के स्रोत हैं। वेद ही समस्त विश्व को सुचारू रूप से व्यवस्थित रखने के नियम एवं कानून हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन को सफलता और शान्ति पूर्वक व्यतीत करने के लिए पूर्ण रूप से वेदाज्ञा का पालन करे और अन्त में–

वेद धर्म से हे पिता मुझे इस तरह का प्यार दे।
छोड़ूँ न जब तलक, सर चाहे कोई क्यों न उतार दे।।

इत्योम्

टीकाराम आर्य
आर्य नगर–डिमौली
पं:– महीउद्दीनपुर जनपद मेरठ (उ.प्र.)

****

ओ३म्

'जीवनमुक्त वेद ऋषि डॉ. रामनाथ वेदालंकार'

● मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि के आरंभ में सृष्टिकर्ता ईश्वर ने मनुष्यों को कर्तव्याकर्तव्य का बोध कराने के लिए वेदों का ज्ञान दिया था। इस सृष्टि के आदि ऋषियों – अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को वेद मंत्रों के अर्थ भी ईश्वर ने ही जनाये थे। इन्हीं चार ऋषियों से ही वेद प्रचार की प्रथा आरंभ हुई। इन चार ऋषियों ने पहले ब्रह्मा जी को ईश्वर से प्राप्त वेदों का ज्ञान कराया और उसके बाद अन्य मनुष्यों को वेद ज्ञान कराने की परम्परा की नींव पड़ी जो सद्यः जारी है। वर्तमान समय में प्राचीन ऋषियों–मुनियों के व्याकरण, निरुक्त, वेदभाष्य आदि ग्रन्थों के आधार पर वेदार्थ का निर्धारण किया जाता है और जो नये विद्वान तैयार होते हैं। वह अपनी मेघा, ऊहापोह व विद्या से वेदों के नये–नये अर्थ करते हैं। सम्प्रति वेदों का कोई ऐसा भाष्य नहीं है जिसे अन्तिम कहा जा सके। अतः नये विद्वानों के लिए यह सम्भावना है कि वह अपना अध्ययन व चिन्तन बढ़ाकर वैदिक साहित्य की अभिवृद्धि करें और आम जनता को सत्य, यथार्थ, सरल, सुबोध, सुग्राह्य, एवं सर्वमान्य वेदार्थ उपलब्ध करायें। इसी परम्परा का निर्वाह करने वाले एक वेदभक्त डॉ. रामनाथ वेदालंकार हुए हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन वेदों को समर्पित किया और वैदिक साहित्य की अभिवृद्धि कर वर्तमान व भावी विद्वानों के लिए वेदाध्ययन एवं वेदार्थ का मार्ग प्रशस्त किया।

आचार्य रामनाथ जी का जन्म 7 जुलाई, 1914 ई. को फरीदपुर, बरेली, उत्तर प्रदेश में माता भगवती देवी एवं पिता लाला गोपालराम के घर हुआ। पिता महाशयजी के नाम से प्रसिद्ध थे, विख्यात स्वतंत्रता सेनानी थे तथा महर्षि दयानन्द में उनकी अटूट श्रद्धा थी। आपकी शिक्षा कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में पं. विश्वनाथ विद्यालंकार आदि विद्वानों के आचार्यत्व में हुई। **14 वर्षों के अनुशासित गुरुकुलीय अध्ययन काल के बाद सन् 1936 में आपने प्रथम श्रेणी में विशेष योग्यता के साथ "वेदालंकार" की उपाधि प्राप्त की। यही उपाधि जीवनभर आपके नाम के साथ शोभा पाती रही। स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने पर आपको कई स्वर्ण पदक प्राप्त हुए।** उन दिनों गुरुकुल की उपाधियों की कहीं मान्यता नहीं थी। आगरा विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम गुरुकुल स्नातकों को एम.ए. में प्रवेश की सुविधा प्रदान की। सन् 1951 में आपने संस्कृत साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आगरा विश्वविद्यालय में भी आपका स्थान सर्वप्रथम रहा। **पी–एच.डी. भी आपने आगरा विश्वविद्यालय से ही की। आपका शोध विषय 'वेदों की वर्णन शैलिया था जो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के समान ही वैदिक साहित्य का एक अनुपम एवं प्रमुख ग्रन्थ है जो वेदों के यथार्थ रहस्य, अभिप्राय व आशय को समझने में सहायक है।** गुरुकुल काँगड़ी संस्था में 38 वर्ष वेद–वेदांग, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र, संस्कृत साहित्य आदि विषयों **के शिक्षक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष रहते हुए समय–समय पर आप कुलसचिव, आचार्य एवं उपकुलपति का कार्य भी करते रहे। लेखन एवं व्याख्यान में भी आपकी रुचि थी। इस संस्था ने आपको अपनी सर्वोच्च विद्यामार्तण्ड की मानोपाधि से भी सम्मानित किया। छात्र जीवन में आप महाविद्यालय के छात्रों द्वारा निकाली जाने वाली हस्तलिखित संस्कृत पत्रिका 'देव गोष्ठी' के सम्पादक एवं 'संस्कृतोत्साहिनी परिषत्' के मन्त्री और कुल मन्त्री रहे। सन् 1936 में आप कुछ समय गुरुकुल अयोध्या फैजाबाद में आचार्य एवं शिक्षक रहे। सन् 1936–38 में जयपुर, ठिकाना खूठ, रूपगढ़–राजस्थान में ग्राम सुधार आश्रम का आपने सूत्रपात किया एवं मुख्याध्यापक रहे। 1976 में आप गुरुकुल विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर तीन वर्ष के लिए पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में 'महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ' के प्रथम आचार्य एवं अध्यक्ष नियुक्त हुए और यहां सन् 1979 तक रहे। यह कार्यकाल आगे भी बढ़ सकता था परन्तु आप इसके इच्छुक नहीं थे। वहाँ से आपके तीन ग्रन्थ प्रकाशित हुए– वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएँ, महर्षि दयानन्द के शिक्षा, राजनीति और कला–कौशल संबंधी विचार, वैदिक शब्दार्थ विचारः। आप द्वारा लिखित अन्य विशिष्ट ग्रन्थ हैं– सामवेद पर संस्कृत–हिन्दी भाष्य, वेदों की वर्णन शैलियाँ, वेद मंजरी, वैदिक नारी, यज्ञ मीमांसा, वैदिक मधु वृष्टि, आर्ष ज्योति, ऋग्वेद ज्योति, अथर्ववेद ज्योति, वैदिक वीर गर्जना आदि। वैदिक एवं संस्कृत सेवा के उपलक्ष्य में आप कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से भी सम्मानित हो चुके हैं जिनमें आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का वेद–वेदांग पुरस्कार, संस्कृत के विशिष्ट विद्वान के रूप में भारत के राष्ट्रपति की ओर से सम्मान, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान का विशिष्ट संस्कृत पुरस्कार, भारतीय विद्या भवन बैंगलूर का गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार प्रमुख हैं।**

डॉ. रामनाथ वेदालंकारजी से हमारी प्रथम भेंट वेद मंदिर, गीताश्रम, ज्वालापुर में सन् 1971 में हुई थी। इससे पूर्व उनका एक पत्र मिला था जिसमें उन्होंने पं. विश्वनाथ विद्यालंकार जी के अथर्ववेद भाष्य का उल्लेख कर उसके प्रथम काण्ड की पाण्डुलिपि विषयक जानकारी चाही थी। इसकी भूमिका यह थी कि दिनांक 11 मार्च, 1971 को पण्डित विश्वनाथ विद्यालंकार, वेदोपाध्याय, विद्यामार्तण्ड की देहरादून में मृत्यु हुई थी। उन दिनों वह अथर्ववेद के पहले काण्ड का भाष्य कर रहे थे। इससे पूर्व वह 2 से 20 काण्डों का भाष्य कर चुके थे, जो समय–समय पर 'रामलाल कपूर ट्रस्ट' से प्रकाशित होता रहा। उन दिनों काण्ड 4–5 का भाष्य प्रेस में था। काण्ड 2–3 की पाण्डुलिपियां तैयार थीं जो पण्डित जी के पास देहरादून में थीं। काण्ड 6 से 20 तक का भाष्य प्रकाशित हो चुका था। पण्डितजी ने अथर्ववेद का यह भाष्य उल्टे क्रम से आरंभ किया था। 20 काण्डों वाले अथर्ववेद के भाष्य का आरंभ पण्डित जी ने पहले 20वें काण्ड से किया, उसके पश्चात् 19, इसके बाद 18,17,16 क्रम से। 11 मार्च को मृत्यु से एक–दो दिन पहले, हम पण्डितजी से मिले थे। हमें अथर्ववेद भाष्य के दूसरे व तीसरे काण्ड की पाण्डुलिपियाँ दिखाईं थीं और हमसे उन्होंने कहा था कि हम इन्हें छपवा दें। पण्डित जी की उन दिनों आयु 103 वर्ष थी। वह जब बोलते थे तो उनके शब्द स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ते थे। वह एक बात को दोहराकर भी बताते थे। सुनते भी कुछ कम थे। उस दिन उन्होंने हमें कहा था कि उन्होंने पहले काण्ड का भाष्य पूरा कर लिया है। फिर बोले थे कि वह पहले काण्ड का भाष्य आरंभ करेंगे। इस अवसर पर उन्होंने दूसरे व तीसरे काण्ड की पाण्डुलिपियाँ हमें सौंप दी थीं और उन्हें प्रकाशनार्थ ले जाने पर काफी जोर दिया परन्तु हमने कहा कि जब प्रथम काण्ड का भाष्य भी तैयार हो जाएगा, तब ले जाएंगे और अवश्य ही छपवाने का प्रयत्न करेंगे। इसी अवसर पर एक संस्मरण यह भी है कि पण्डितजी ने उन दो काण्डों की पाण्डुलिपियाँ अपने कमरे में अपनी शय्या के साथ वाली अलमारी से ताला खोलकर निकालीं थीं। हमारे द्वारा बाद में ले जाने की बात कहने पर उन्होंने उसे पुनः अलमारी में रखकर ताला लगा दिया था। चाबी सदैव उनके पास ही रहती थी। उनकी पुत्री ने इस अवसर पर बताया था कि पण्डितजी कभी वह चाबी किसी अन्य को व उन्हें, अपनी पुत्री इन्दिरा खन्ना को भी नहीं देते थे और आपको तो उन्होंने वह पाण्डुलिपि ही सौंप दी थी जिससे वह आश्चर्यान्वित थीं। उनके कमरे में कड़ा अनुशासन होता था और वहाँ जाना व उनके कागजों आदि को छूना आदि वर्जित था। हमें पाण्डुलिपियाँ सौंपने पर उन्हें आश्चर्य हुआ, परन्तु आगामी एक–दो दिन में क्या घटना घटनेवाली थी, हम दोनों ही अनभिज्ञ थे, शायद पण्डितजी को आभास रहा हो। उनका शरीर भी अत्यन्त क्षीण व दुर्बल था। उनकी मृत्यु के बाद हमने इस स्थिति से रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ के अधिकारियों को अवगत करा दिया था तथा उनकी मृत्यु के पश्चात दूसरे व तीसरे काण्ड की पाण्डुलिपि ट्रस्ट में पहुँचा दी थी। बहुत दिनों तक प्रयास करने पर भी जब पहले काण्ड की पूरी या अधूरी पाण्डुलिपि नहीं मिली तो यह समझा गया कि उन्होंने पहले काण्ड का भाष्य किया ही नहीं। अतः पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने डॉ. रामनाथ वेदालंकार से प्रथम काण्ड का भाष्य करने का अनुरोध किया जिससे पूरा भाष्य प्रकाशित हो सके। डॉ. रामनाथजी गुरुकुल कांगड़ी में पं. विश्वनाथ के शिष्य रहे थे, अतः उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस स्थिति में उन्होंने हमें पत्र लिखा और सन् 1991 में हमारी वेद मंदिर, गीताश्रम, ज्वालापुर में श्रद्धेय आचार्यजी से भेंट हुई। आर्य पत्र–पत्रिकाओं में हमारे लेख आदि को देखकर पण्डित रामनाथ जी हमें एक वृद्ध व्यक्ति कल्पित किए हुए थे। जब हम उनसे मिले तो 39 वर्षीय एक युवा व्यक्ति को देखकर वह कुछ विस्मित हुए और उन्होंने हमें अपनी कल्पना के बारे में बताया। उन्होंने हमें प्रेरित किया कि हम पण्डित विश्वनाथ के परिवार में लगातार जाकर प्रथम काण्ड की पाण्डुलिपि को खोजते रहें। **उनकी प्रेरणा से हम निरन्तर जाते रहे और इस प्रकार लगभग एक वर्ष से अधिक के प्रयास के बाद हमें वह पाण्डुलिपि एक दिन प्राप्त हो गई।** हमने पहले उस पाण्डुलिपि की फोटो प्रति कर एक अतिरिक्त प्रति सुरक्षित की और मूल प्रति को डा. रामनाथजी को ज्वालापुर ले जाकर दिखाया और उसके बाद उनकी सहमति से उसे रामलाल कपूर ट्रस्ट पहुँचा दिया जो बाद में दूसरे व तीसरे काण्ड के भाष्य के साथ छपकर आर्य जनता को स्वाध्याय हेतु सुलभ हो गया। **इस प्रकार हम पहली बार डा. रामनाथजी के सम्पर्क में आये।**

शेष अगले अंक में....

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 29-30/05/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

सतपाल आर्य का हुआ सम्मान

डी.ए.वी. के 127वें वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी मेहनत और लगन से सफलता की उंचाई पर पहुंचाने वालों को जिला आर्य सभा कोटा की ओर से सम्मानित किया गया। डी.ए.वी. परिसर में आयोजित एक सादे समारोह में अपने प्रयासों की सफलता का सम्मान पाकर आयोजकों के चेहरे भी खिल उठे।

सतपाल आर्य कोटा आकर यज्ञ महोत्सव व 'आओ जीवन को यज्ञमय बनाएं' कार्यक्रम की तैयारियों को देख रहे थे। तथा महोत्सव से संबंधित सभी तरह की व्यवस्थाओं, साहित्य प्रकाशन व वितरण एवं डी.ए.वी. के सेवा प्रकल्प आदि के लिए यथायोग्य दिशा प्रदान करते रहे।

इस अवसर पर सतपाल आर्य ने कहा कि मुझे इस बात का गर्व है कि कोटा में आर्य समाज जिला सभा के सदस्य व डी.ए.वी. का पूरा स्टाफ इस कार्यक्रम की तैयारियों के लिए पूर्ण समर्पित भाव से कार्य करता रहा है।

इसी कार्यक्रम में आर्य समाज के डॉ. वीपी गुप्ता, दिनेश शर्मा चन्द्रमोहन कुशवाह, कौशल रस्तोगी, जेएस दुबे, रमेश कुमार को स्मृति चिन्ह व वैदिक साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

जिला सभा की ओर से महर्षि दयानंद के चित्र से सज्जित एक बड़ी दीवार घड़ी डी.ए.वी. के बडे हॉल के लिए प्राचार्या को भेंट की गई।

इस अवसर पर प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा के अतिरिक्त आर्य समाज जिला के मंत्री कैलाश बाहेती, डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, डॉ.केएल दिवाकर, जेएस दुबे, रामप्रसाद याज्ञिक, ओप्रकाश तापड़िया, पं. रादेव, दिनेश शर्मा, कौशल रस्तोगी आदि उपस्थित थे।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल, अमृतसर मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत

केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर को राष्ट्रीय स्कूल स्वच्छता पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। यह विशिष्ट सम्मान मानव संसाधन मंत्रालय, सी.बी.एसई एवं जी.आई.जैड द्वारा सयुक्त रूप से चलाए जा रहे अभियान 'परिवर्तन की लहर' के अन्तर्गत प्रिंसीपल अंजना गुप्ता को दिल्ली में आयोजित एक विशेष समागम में मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय डा. एम.एम. पल्लम ने अपने शुभ कर कमलों से दिया।

विद्यालय को 60,000 रूपए का चैक, प्रशस्ति पत्र स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस समागम में विद्यालय की ओर से वातावरण शुद्धिकरण के लिए किए जा रहे प्रयासों पर संक्षिप्त लेख भी प्रस्तुत किया गया। इस समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री अपूर्व चन्द्र, श्री अशोक सिंघवी, संयुक्त सचिव शहरी विकास मंत्रालय सरकार, सुप्रसिद्ध पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी श्रीकांत, सी.बी.एस.ई. के चेयरमैन श्री विनीत जोशी, जी. आई. जैड. के निर्देशक श्री स्टीफन हैलमिंग व अन्य कई गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

प्रिंसीपल अंजना गुप्ता ने बताया कि विद्यालय को यह पुरस्कार स्वच्छता और अरोग्य केलिए चलाई जा रही गतिविधियों और उनके सफल कार्यान्वन के लिए दिया गया। विद्यार्थियों में स्वच्छता के गुणों को विकसित करने का सफल किया जा रहा है।

डी.ए.वी. मलेरकोटला में छात्रों को कैंसर जैसी भयानक बीमारी से जागरुक करवाया

Caring Souls foundation लखनऊ एक ऐसी संस्था है जो कैंसर पीड़ित लोगों की सहायता के लिए सदा ही तत्पर रहती है। यह संस्था WHO के नैशनल कैंसर कंट्रोल प्रोगाम, NACO तथा UNESCO के दिए गए मार्गदर्शन का अनुसरण करती है। इसी संस्था से श्रीमान जयकृत सिंह रावत ने डी.ए.वी. स्कूल के छात्रों को कैंसर जैसे भयानक रोग के बारे जानकारी दी तथा इस बीमारी के रोकथाम के प्रति जागरुक करवाया। डी.ए.वी. स्कूल सदा से ही समाज में फैली प्रत्येक प्रकार की कुरीतियों या बीमारियों सम्बंधी जागरुकता लाने के लिए अग्रसर रहता है तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश करता है। उल्लेखनीय है कि अगर कोई गरीब व्यक्ति जो दुर्भाग्यवश कैंसर जैसी भयानक बीमारी से पीड़ित है और Caring Souls foundation से वित्तीय सहायता लेना चाहता है तो वह डी.ए.वी. स्कूल मलेरकोटला से फारम प्राप्त कर सकता है।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुदित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**